भूदान-विचार-शतक

आशीर्वचन :-
श्री केदारनाथ जी

संपादक :-
चीनुभाई गी. शाह

आशीर्वचन

"भूदान-विचार-शतक" नाम की यह छोटी-सी किताब, इस यज्ञ के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे, और उनके सहायक श्री जयप्रकाश नारायण दादा धर्माधिकारी, श्री शंकरराव देव, श्री रविशंकर महाराज आदि प्रचारकों के कुछ मौलिक वचनों का संग्रह है। ऊपर बताये हुए सज्जनों ने अपने लेखों में इस आन्दोलन का महत्व, इसका रहस्य, और मानव समाज पर उसके होने वाले सुपरिणाम आदि विषयों का सविस्तृत प्रतिपादन किया है। जिनको यह सब पढ़ने का वक्त न हो उनको "शतक" के मारफत आन्दोलन का इतिहास और अद्यतन जानकारी संक्षिप्त में मिलेगी। सच पूछिये तो भूदान-यज्ञ के बारे में आज देश भर में जानकारी हो गई है। कम अज कम देश के लिये प्रेम व श्रद्धा रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान इस आन्दोलन की ओर खींचा है। ऐसा होने पर भी जहां तक भूदान प्रवृत्ति के पीछे की जो सर्वोदय विचारधारा है वह हमारी समझ में न
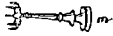
आगे यहां तक इस यज्ञ के निमित्त से प्रकाशित साहित्य का प्रचार करने की आवश्यकता है। भूदान-यज्ञ के पीछे किसी भी "वाद" का सम्बन्ध नहीं है। इसका हेतु सिर्फ इतना ही है कि देश में सभी लोगों को नेकी से अपनी जिन्दगी बसर करने के लिये यथा योग्य सुख-सुविधा प्राप्त करा दे। इसी में से भूमि समस्या का सवाल पहिला पैदा होता है। भूमि पर किसी व्यक्ति का हक नहीं, "सबै भूमि गोपाल की" यानी सब लोगों की माननी चाहिये, इस पर ही हम सब के निर्वाह का आधार है इसलिये हमें चाहिये कि जो जोतने के लिये तैयार हों उन लोगों में हम सब सोच समझ कर भूमि का करीब करीब समान वितरण करें। और अगर हम भूमि समस्या को सही तरीके से हल कर सके तो इसी में से समानता याने सर्वोदय की विचार श्रेणी जनता में फैल जायगी और उसका असर सम्पत्ति दान साधन दान व जीवन दान आदि के पर होगा। यह सब बातें हो सके इस लिये हरेक आदमी को चाहिये कि वह भूमिदान प्रवृत्ति के निमित्त से निर्माण हुआ साहित्य का अध्ययन करे।
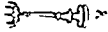
चूँकि मुझे बराबर खयाल है कि समता और बंधू भावना के तत्त्व को समाज में फैलाने के लिये हममें कितने बड़े स्वार्थ त्याग, उदारता, सहिष्णुता और पवित्रता की आवश्यकता है इस लिये मैं यह तो नहीं समझता हूँ कि "शतक" के प्रकाशित होने मात्र से इस आंदोलन में कोई बड़ा भारी कार्य हो जायेगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि श्री चीनुभाई शाह का यह प्रयत्न इस दिशा में कुछ भी मदद रूप हो।

—केदारनाथ

आमुख
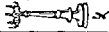
यह किताब सर्वोदय समाज एव भूदान-यज्ञ के पीछे की विचारधारा के कतिपय विचारों का संकलित संग्रह है। इस विचारधारा के बारे में संक्षिप्त में लेकिन एक प्रवाह के रूप में मानव समाज के विभिन्न नेताओं के विचार इस किताब में पढ़ने को मिलेंगे। पु. विनोबा जी के विचारों को आगे बढ़ाने मे "शतक" जरूर मदद करेगा। फिलहाल जब कि हर पेशे के और हर तरह के लोगों के पास लम्बी चीजें पढ़ने का वक्त नहीं है तब विषय को समझने में तकलीफ न पड़े इस तरीके से पूरे विषय को जवाबदार व्यक्तियों के मुँह से ही संक्षिप्त में रखने का यह तरीका हर दिल पसन्द साबित होगा। चूंकि इस किताब को तैयार करने में लेखक ने गहरा अध्ययन किया है और काफी दिलचस्पी ली है मुझे उम्मीद है कि उनकी यह कोशिश काफी कामयाबी हांसिल करेगी।

गर आप जानना चाहते हों कि भूदान के प्रणेता सन्त विनोबा, राष्ट्रपिता गांधी जी, हमारे लाडले नेता पंडित जवाहरलाल, अजात शत्रु
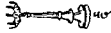
राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद, गुजरात के प्रखर सेवक श्री रविशंकर महाराज, आचार्य कृपलानी, भूदान आंदोलन के स्तंभ श्री जयप्रकाश नारायण और देश विदेश के छोटे बड़े विचारकों की सर्वोदय समाज और खास करके भूदान आंदोलन के बारे में क्या रुख है तो आपके लिये यह किताब दिशा-सूचक साबित होगी।

कालात्मा को पहचान कर अपने कल्याण की इच्छा रखने वाले हर आदमी को अपनी कूच का काफी सामान इस किताब में मिलेगा। बिना आपको तकलीफ दिये एक पूरी फिलसुफी लेखक आपको इस तरीके से समझा देते हैं कि किताब पढ़ने के बाद आप उन चीजों से मुतासिर हुये बिना रह नहीं सकते।

श्री चीनुभाई बम्बई के एक युवान कार्यकर हैं। आपने सर्वोदय समाज की विचार श्रेणी के बारे में पुराने जमाने से लेकर बिलकुल अद्यतन लेखकों के साहित्य का गहरा अध्ययन किया है और आपने रचनात्मक कार्यों
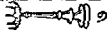
को अपने जीवन का अग बना दिया है इस लिये इस किताब की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। बहुत मथन के बाद साहित्य सागर से लेखक ने विचार रत्न चुने है और उन रत्नों को एक खास तरीके से जनता के सामने रक्खा है ताकि कम से कम तकलीफ से अपनी बात समझा सके। अलावा इसके पू. नाथजी का आशीर्वचन इस किताब को और भी दिलचस्प बना देता है।

पढ़ने वालों से मेरी विज्ञप्ति है कि वे इस किताब को इस दृष्टि से पढ़े कि जो बात उनको जँच जाय और अपने जीवन में ग्रहण करने के काबिल लगे उसको तुरन्त ग्रहण करें।

आखिर मे पु. विनोबा का यह विचार रत्न कि "ज्ञान से भी दृष्टि ज्यादाह महत्व की है" आपके सामने रख कर मै मेरा आमुख पूरा करता हूँ।

गणपति शकर देशाई.
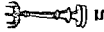
परिचय

सन् १९५१ के अप्रैल की अठारह तारीख का दोपहर था। विनोबा शिवरामपल्ली सम्मेलन से अपनी पैदल वापसी में हैदराबाद राज्य के तेलंगाना विभाग के पोचमपल्ली नाम के गांव में आज ठहरे थे। हरिजनों की सभा थी। न मालूम हरिजनों ने इतनी हिम्मत कहां से इकट्ठी की कि उन्होंने विनोबा जी से कहा "हमें जमीन चाहिये ताकि हम, हमारा निर्वाह अपनी मिहनत-मशक्कत से कर सकें।" विनोबा जी को भी बात जँच गई और यह दिन मानों कि भारत के भूमिहीनों के लिये एक खुशनसीब दिन था कि शाम की प्रार्थना सभा में विनोबा जी के कहने पर रामचन्द्र रेड्डी नाम के एक सद्गृहस्थ ने अपनी जमीन में से १०० एकड़ जमीन इन हरिजन भाइयों में बांटने के लिये दी। "मांगो और मिलेगा" की ईसा मसीह की श्रद्धा को आज करीब दो हजार साल के बाद फिर संजीवनी मिली। भूदान की गंगोत्री शुरू हो गयी। इतनी कुदरतन् इतनी
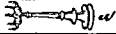
हिमालय से गंगा की शुरुआत। भारत का दिल व दिमाग हिल उठा। क्या यह सतयुग है? अरे! पुराने जमाने में भी लोग कहने से कभी जमीन देते थे ऐसा तो न कभी पढ़ने में आया है न सुनने में। हां यह सच है, लेकिन धर्म की भावनायें भी जमाने की मांग को मद्दे नजर रखते ही काम करती हैं। और आज कल के हालात में जमाने की मांग एक ही हो सकती है कि उत्पादन के साधन उनको लौटा दिये जाँय जो खुद अपने आप उत्पन्न करते हैं।

विनोबा के दिल व दिमाग में एक बड़ा भारी मंथन शुरू हुआ और नतीजा यह हुआ कि विनोबा ने दिल से ठान ली कि बिना हमारे सबसे अहम सवाल यानी भूमि समस्या को हल किये, इस देश में गरीबों के लिये स्वराज कोई माने नहीं रखता और उसे हल करने के लिये भूमिवानों के दिल को अपील करने का, प्रेम का, अहिंसा का, तरीका ही सच्चे मानों में कारगर है।

१०
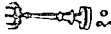
बस ! संत के लिये इतना ही काफी था। न किसी से मशविरा किया गया, न कोई बड़ा सम्मेलन भरा गया, या न कोई प्रेस कान्फरेंस मुकर्रर की गयी। संत ने दूसरे ही दिन से मांगना शुरू किया, लेकिन एक भिखारी की हैसियत से नहीं पर गरीबों का अमीरों के दिल को हिलाने का अधिकार है, अमीरों को अमीर रहना यह अपनी खुद की तरक्की और उन्नति के खिलाफ है और यह सब विचार समझा कर खुद अमीरों की भलाई—जिसमें गरीबों की भलाई निहित है-करने का युग परिवर्तक काम विनोबा ने शुरू किया। दान शब्द ले लिया, लेकिन दान का अर्थ किया "दानं संविभागः" याने दान का मतलब है सम्यक विभाजन।

मुल्क में एक हवा चली, तेलंगाना से करीब बारह हजार एकड़ जमीन दान में मिली। हर बात में शक लानेवाले हमारे दिलों ने विनोबाजी से कहा "ठीक है, तेलंगाना तो संकट ग्रस्त विस्तार था। कम्युनिस्टों से ग्रस्त मानवों ने घबराकर जमीन दे दी। दूसरी जगह यह बात चलनेवाली नहीं है"।

बापू जब नौआखाली में घूमते थे तब किसी पत्रकार ने सन्देशा मांगा। बापू ने कहा "आमार कार्य आमार बानी।" ठीक उसी तरह विनोबा ने अपने कार्य से बता दिया कि यह आन्दोलन की कामयाबी संकट-ग्रस्त मानवों की घबराहट पर निर्भर न थी बल्कि मानव मात्र के दिल को न्याय और नीति के उच्चतम आदर्श से प्रभावित किया जा सकता है इसी श्रद्धा पर आधारित थी।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने चाहा कि पंच वर्षीय योजना के बारे में विनोबा जी से कुछ सलाह मशविरा किया जाय। परमधाम पवनार के अपने आश्रम को आखिरी सलाम करके फिर से सन्त पैदल निकल पड़ा। चला देहली की ओर। राजस्थान से होकर उत्तर प्रदेश मे जैसे जैसे देहली की ओर यह यात्रा आगे बढ़ती गई, हमारे शंकाशील दिलों को भी सन्त की श्रद्धा के आगे झुकना पड़ा। हजारों एकड़ जमीन दान में मिलती गयी, और कभी कभी ऐसे प्रसंग उपस्थित हुए कि दिलवालों के लिये आंख को निर्जल रखने का करीब करीब नामुमकिन हो गया। देश और देशवासी

प्रेम सागर में नहाने लगे। बापू के बाद देश मे निराशा और मायूसी का जो अन्धकार छा गया था वह संत के कदम कदम पर दूर होता गया और सारा देश एक अंगडाई लेकर फिर खडा होने की कोशिश करने लगा और भूमिमाता की आंखें अपने बच्चों को उठते देख के फिर सजल हुईं। राजघाट से सन्त ने पुकारा "मैं भिक्षा लेने नहीं, दीक्षा देने आया हूँ।"

भूखी जनता चुप कद रहसी।
धन-धरती अब बँट के रहसी॥

सारे जहां मे जो कुछ संपत्ति याने धन, धरती, बुद्धि, शक्ति वगैरह है वह सारे समाज की है और समाज का हर व्यक्ति उसका पूरा लाभ उठा सकता है, समाज में कोई ऊँच नहीं, कोई नीच नहीं, सभी को समान मजदूरी दी जाय, सुख सुविधा की सहूलियतें करीब करीब सबको समान बांटी जायं। यह धर्म-विचार लेकर सन्त आगे बढ़ता गया—धर्म चक्र परिवर्तन के लिये। कदीम जमाने के सारे शास्त्र, वेद, उपनिषद,

बाईबल, गीता, कुरान–सबको घोलकर पीकर और भगवान बुद्ध और महावीर, सत्यवीर सोक्रेटीस, महम्मद पैगम्बर, ईसा मसीह, शंकराचार्य से लेकर मार्कस और महात्मा तक के कन्धों पर चढ़कर विनोबा ने पुकारा "आज स्वार्थ और खुदगर्जी का यह तकाजा है कि हम जमाने की मांग को समझें और भगवान ने सर्जी हुई और आदम ने बनाई हुई सब चीजों पर की अपनी निजी मालकियत छोड़ दें और उसे समाज को सुपुर्द कर दें, वरना मानव समाज के सामने सर्वनाश के बिना और कुछ नहीं है।'

और हमारा सन्त कोई भला-भोला भक्त नहीं है। वह तो बड़ा गिनती करनेवाला है उन्होंने साफ सुना दिया कि गर सन् १९५७ के पहले भूमि-समस्या को हल करनेके पहले कदमकी तौर पर ५ करोड एकड जमीन न मिली तो फिर जो तरीका आज इख्तियार किया गया है उससे ज्यादह कारगर तरीका इख्तियार करना होगा। और हम सब जानते है कि हिंदोस्तान की तवारीख में' ५७ की साल क्या अहमीयत रखती है?

भूदान का कार्य जोर व शोर से तरक्की करता बढ़ रहा है। अपनी इस यात्रा में भूदान को और भी दोस्त मिल गये हैं। और वे हैं सम्पत्तिदान श्रमदान, बुद्धिदान, साधनदान, जीवनदान और समग्र गांव के रूप में सर्वस्वदान। आज देश के और विदेश के कुछ छोटे से गिरोह को छोडकर हर सोचनेवाले के दिल में भूदान के प्रति श्रद्धा पैदा हुई है और कई हजार कार्य कर्तायें अपना थोडा बहुत वक्त इस क्रांतिकारी आन्दोलन के लिये समर्पित करते हैं और अपने अपने तरीकों से प्रचार कर रहे हैं। कुदरतन् उनसे हजार सवाल पूछे जाते हैं और अपनी शक्ति के अनुसार दूसरों की तसल्ली करनी होती है। इस लिये ऐसा सोचा गया था कि एक प्रदर्शनी रखी जाय जिसमें पोस्टरों के मारफत भूदान-यज्ञ के हर पहलू को समझाने की कोशिश की जाय। इस खयाल से मैंने भूदान यज्ञ में काम करने वाले और बाहर से दिलचस्पी रखनेवाले कतिपय नेताओं के विचार पढ़ें और उनमें से कई विचार पोस्टरों के लिये चुनें। चुंनते वक्त ही मुझे महसूस होने लगा कि प्रदर्शनी के अलावा इन चीजों को एक किताब के

इस किताब में मैंने कई पुस्तकों से और कई लेखकों से चीजें चुनी हैं। चूंकि करीब सौसे ज्यादह खयाल दिये गये हैं इसलिये इस किताब का नाम "भूदान-विचार-शतक" रखा है। खयाल के शीर्षक मेरे हैं और किताब के आखिर में जो "नवनीत" शीर्षक के नीचे मेरे अध्ययन का निचोड दिया है वह मेरा लिखा हुआ है। अलावा इसके इस किताब में मेरा कुछ भी नहीं है।

मैं यह अपना परम सौभाग्य समझता हू कि मेरी इस छोटी सी किताब को प्रस्तावना के रूप में श्री केदारनाथ जी का आशिर्वाद मिला। इस किताब का गांधी-जयन्ती के दिन प्रकाशित होना भी मेरे लिये कम सौभाग्य की बात नहीं है।

अगर भूदान-यज्ञ समिति (बम्बई) के सदस्यों ने और खास करके बम्बई के भूतपूर्व नगरपति श्री गणपति शंकर देशाई ने मेरी हिम्मत अफझाई न की होती तो शायद यह किताब आप के आगे में न रख सकता।

रूप में प्रकट की जायें जिससे न सिर्फ कार्यकर्ताओं को बल्कि आम जनता को भी, भूदान आन्दोलन क्या चीज है? किस तरीके से चलाया जाता है? उसके पीछे की विचार श्रेणी क्या है? उसके बारे में हमारे विभिन्न नेता-गण क्या कह रहे हैं? और ऐसी दूसरी कई तफसीलें मिल जायँगी जो आज खास जरूरी हैं।

इस किताब का यह दावा कतई नहीं है कि भूदान के हर पहलू को यह साफ तौर पर जाहिर करती है लेकिन इतनी ख्वाहिश जरूर है कि जिनको थोडी सी दिलचस्पी भूदान कार्य में है उनको इन खयालों की वजह से भूदान का जो बडा भारी साहित्य हिन्दुस्तान की कई जबानों में प्रगट हुआ है उसको पढने के लिये और उसका गहरा अध्ययन करने के लिये प्रेरणा मिले और उनकी दिलचस्पी सिर्फ बाहरी न रहकर भूदान यज्ञ की विचारधारा की गहराई में जायँ और अपने आप को इस समाज की स्थापना के लिये तैयार करें जिसमें "न कोई बंदा रहेगा न कोई बंदा नवाज।"

इस किताब मे मैंने कई पुस्तकों से और कई लेखकों से चीजें चुनी है। चूंकि करीब सौसे ज्यादह खयाल दिये गये है इसलिये इस किताब का नाम "भूदान-विचार-शतक" रखा है। खयाल के शीर्षक मेरे हैं और किताब के आखिर में जो "नवनीत" शीर्षक के नीचे मेरे अध्ययन का निचोड दिया है वह मेरा लिखा हुआ है। अलावा इसके इस किताब में मेरा कुछ भी नहीं है।

मै यह अपना परम सौभाग्य समझता हू कि मेरी इस छोटी सी किताब को प्रस्तावना के रुप में श्री केदारनाथ जी का आशिर्वाद मिला। इस किताब का गांधी-जयन्ती के दिन प्रकाशित होना भी मेरे लिये कम सौभाग्य की बात नहीं है।

अगर भूदान-यज्ञ समिति (बम्बई) के सदस्यों ने और खास करके बम्बई के भूतपूर्व नगरपति श्री गणपति शंकर देशाई ने मेरी हिम्मत अफझाई न की होती तो शायद यह किताब आप के आगे में न रख सकता।

आखिर में इन भाई बहनों का मैं शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने इस कार्य की तैयारी में अपनी ओर से मुझे प्रोत्साहन दिया और मेरी हर तरह की मदद की।

—चीनुभाई गी. शाह

इंदुमती हाउस
नरीमान रोड, विलेपार्ले (पूर्व)
बम्बई-२४

१८
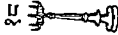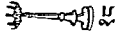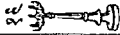
समर्पण

जीवन सहचरी को जिसकी प्रेरणा के बिना भूदान-यज्ञ
के कार्य में भाग लेना मेरे लिये शायद
असम्भव था।

—
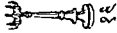
सर्व धर्म स्मरण

ओश्म् तत्सत् श्री नारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक सविता पावक तू।
ब्रह्म मज़्द तू, यह्व शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू।
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू अकाल निर्भय, आत्मलिंग शिव तू।

—विनोबा

सेवक की प्रार्थना

हे नम्रता के सागर !
दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी !

गंगा जमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित इस देश में तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे। हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे, तेरी अपनी नम्रता दे, हिन्दुस्तान की जनता से एक रूप होने की शक्ति और उत्कण्ठा दे।

हे भगवन !

तू तभी मदद के लिये आता है जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है। हमें वरदान दे कि सेवक और मित्र के नाते जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं, उससे कभी अलग न पड जाय। हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना ताकि इस देश को हम ज्यादह समझें और ज्यादह चाहें।

—गांधीजी

ग्यारह व्रत

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह ।
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जन ॥
सर्व धर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्श भावना ।
विनम्र व्रत निष्ठा से ये एकादश सेव्य हैं ॥

× × ×

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह ।
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जन ॥
सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी, स्पर्श भावना ।
हीं एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रत निश्चयें ॥

(आश्रम के ग्यारह व्रत)

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।

जब धर्म भावना मन्द पडती है, तब धर्म को चालना देने के लिये भगवान समाज को एक नया विचार देता है। एक नया शब्द देता है। उस शब्द और उस विचार के आधार से फिरसे धर्म का उत्थान होता है। हमारे लिये आज ऐसे ही "सर्वोदय" शब्द मिला है। उस शब्द का मतलब है सबका भला।

विनोबा
"धर्मचक्र प्रवर्तन"
रामगढ़ १३-७-५२

सर्वोदय के लक्षण

सर्व भूमि गोपाल की ।
घर घर चरखा चाले ।
गांव गांव सुथरा हो ।
झगडा नहीं व्यसन नहीं ।
सब मिलकर एक परिवार हो ।
मुख में है नाम हाथ में रे काम ।
यह है सर्वोदय का सच्चा नाम ।

विनोबा
"नई क्रांति के गीत"

सर्वोदय की भावना

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख माप्नुयात् ॥

यहाँ सब सुखी हों, सब निरोगी बनो, सब कल्याण को देखो और किसी को दुःख प्राप्त न हो ।

—भारतीय दर्शन

खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खमंतुमे ।
मित्ती मे सव्व भूएसु वेरं मज्झ न केणई ॥

सर्व जीवों को मैं क्षमा करता हूँ और सब जीव मुझे क्षमा करें । समग्र विश्व से मेरी मैत्री है । मुझे किसी से भी वैर नहीं है ।

—"वंदिता सूत्र" जैन दर्शन

कैसा है यह सुखमय सपना, मानो सारा जग है अपना ।
सबके सुख में सुख मानें हम, सबके दुःख में सीखें तड़पना ॥

—दुःखायज

सर्वोदय के लक्षण

सबै भूमि गोपाल की ।
घर घर चरखा चाले ।
गांव गांव सुथरा हो ।
झगड़ा नहीं व्यसन नहीं ।
सब मिलकर एक परिवार हो ।
मुख में है नाम हाथ में रे काम ।
यह है सर्वोदय का सच्चा नाम ।

विनोबा
"नई क्रांति के गीत"

२५

सर्वोदय

रस्किन ने अपने "अन टु दिस लास्ट" पुस्तक में मेरी राय में तीन मुख्य बातें कही हैं। वे इस प्रकार हैं :-

१—व्यक्ति का श्रेय समष्टि के ही श्रेय में निहित होता है।

२—वकील के काम की कीमत भी नाई के काम की कीमत के समान ही है, क्योंकि हर एक को अपने व्यवसाय में से अपनी आजीविका चलाने का समान अधिकार है।

३—मजदूर का याने किसान का अथवा कारीगर का जीवन ही सच्चा और सर्वोत्कृष्ट जीवन है।

गांधीजी
"सर्वोदय का इतिहास
और शास्त्र"

२६
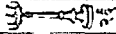
अब जाग उठा है संसार

सामाजिक जीवन में मैं एक काम करने की योग्यता रखता हूँ, तुम कोई दूसरा काम करने की योग्यता रखते हो। तुम देश का शासन कर सकते हो, मैं पुराने जूतों की मरम्मत कर सकता हूँ। लेकिन इसमे यह सिद्ध नहीं होता कि तुम मुझसे बडे हो, कारण तुम मेरे जूतों की मरम्मत नहीं कर सकते। मैं देश का शासन नहीं कर सकता तो तुम जूतों की मरम्मत नही कर सकते। मैं जूतों की मरम्मत करने में कुशल हूँ, तुम वेदों को पढ़ और समझ सकते हो, लेकिन यह कोई कारण नहीं कि तुम मेरे सिर पर पांव रखो।

—स्वामी विवेकानन्द

'सर्वोदय' यानी शोषणहीन शासन मुक्त वर्ग विहीन समाज

भूदान-यज्ञ आंदोलन केवल जमीन मांगने का और बांटने का कार्यक्रम नहीं है। सर्वोदय की कल्पना की एक सम्पूर्ण क्रांति की यह पहली सीढ़ी है।

× × × ×

'सर्वोदय' में सबका भला होगा, सब सुखी होंगे, ऊंचनीच का भेद न होगा, न्याय होगा शोषक न होंगे और समता होगी। यह समाज ऐसा होगा जिसमें सत्ता जनता के हाथ में होगी और वही उसका संचालन करेगी।

जयप्रकाश
"नई क्रांति"

न कोई बंदा रहेगा न कोई बंदा नवाज

सर्वोदय के अन्तर्गत तो सबके पेशों का मूल्य समान होना चाहिये, जिससे रहन-सहन का स्तर करीब करीब समान हो। श्रमजीवियों को कम व बुद्धि जीवियों को अधिक मजदूरी यह अब सहन नहीं किया जा सकता। देश और समाज में शरीरश्रम की प्रतिष्ठा अब होनी चाहिये। जमीन पर जोतनेवालों का हक, सब पेशों का समान मूल्य और शरीर श्रम की प्रतिष्ठा यदि ये तीन आधार भूत बातें हम मान लेते हैं तो फिर उत्पादन के साधनों पर लोगों को मालिकी बनाये रखने की इच्छा नहीं होगी।

शंकरराव देव
"नई क्रांति"

'सर्वोदय' यानी शोषणहीन शासन मुक्त वर्ग विहीन समाज

भूदान-यज्ञ आंदोलन केवल जमीन मांगने का और बांटने का कार्यक्रम नहीं है। सर्वोदय की कल्पना की एक सम्पूर्ण क्रांति की यह पहली सीढ़ी है।

× × × ×

'सर्वोदय' में सबका भला होगा, सब सुखी होंगे, ऊंचनीच का भेद न होगा, न्याय होगा शोषक न होंगे और समता होगी। यह समाज ऐसा होगा जिसमें सत्ता जनता के हाथ में होगी और वही उसका संचालन करेगी।

जयप्रकाश
"नई क्रांति"

न कोई बंदा रहेगा न कोई बंदा नवाज

सर्वोदय के अन्तर्गत तो सबके पेशों का मूल्य समान होना चाहिये, जिससे रहन-सहन का स्तर करीब करीब समान हो। श्रमजीवियों को कम व बुद्धि जीवियों को अधिक मजदूरी यह अब सहन नहीं किया जा सकता। देश और समाज में शरीरश्रम की प्रतिष्ठा अब होनी चाहिये। जमीन पर जोतनेवालों का हक, सब पेशों का समान मूल्य और शरीर श्रम की प्रतिष्ठा यदि ये तीन आधार भूत बातें हम मान लेते हैं तो फिर उत्पादन के साधनों पर लोगों का मालिकी बनाये रखने की इच्छा नहीं होगी।

शंकरराव देव
"नई क्रांति"

२६

हमारा मकसूद
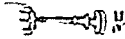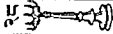
भूदान यज्ञ मूलक, ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रांति के जरिये शोषण हीन, शासन-मुक्त, वर्ग विहीन समाज की स्थापना।

—बोध गया-ध्वनि

३०

धर्मचक्र प्रवर्तन

धर्मचक्र प्रवर्तन का अर्थ है समाज-चक्र-परिवर्तन। हमें सारा समाज ही बदलना है और वह अहिंसक क्रांति के जरिये ही बदलना है। ऐसा समाज वर्ग हीन, शोषणहीन और भेद-भाव हीन होगा, याने वह एकरस समाज होगा जो भूमि के आधार पर खड़ा होगा। "सबै भूमि गोपाल की" सारी भूमि भगवान की है, जैसे कि हवा, पानी, प्रकाश। और भगवान की ओर से वह सारे गांव की और गांव की ओर से किसानों की रहेगी।

—विनोबा, ''धर्मचक्र प्रवर्तन''

× × × ×

प्रभु ने जिस दिन दिया शरीर,
दिये उसी दिन हमें दयाकर भू-नभ-पावक-नीर-समीर।

—मैथिलीशरण गुप्त

३१

अहिंसा ही क्यों ?

ाया था :—

त्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
स्य अहम् चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥

दुनिया मेरी तरफ मित्र की निगाह से देखे, अगर ऐसा हम
ो हमें भी दुनिया की तरफ इसी मित्र भावना से देखना होगा।

—विनोबा "धर्मचक्र प्रवर्तन"

इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं"
ा रखते हैं न कि मरने की।

—"दश वैकालिक सूत्र" 'जैन दर्शन'

शक्ति दंड के भय से हासिल की गई शक्ति की
क प्रभावशाली और स्थायी होती है। —गांधीजी

क्या हिंसा कारगर है ?

नहि वेरेन वेरानि सम्मतीध कुदाचनं ।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो ॥

यहां कभी वैर से वैर का शमन नहीं होता है। अवैरसे-प्रेम से ही शमन होता है। यह सनातन धर्म है। —धम्मपदं, यवकवग्गो, "बौद्ध दर्शन"

× × × ×

कुछ लोग यह आपत्ति करते हैं कि दान मांग करके समाज को बदलना संभव नहीं है। गरीब संगठित हों, तभी समाज बदलेगा और उसके लिये हिंसा का उपयोग करना ही होगा।

हिंसा से समाज बदल सकता है, पर हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं वैसा वह नहीं बनेगा। हिंसा से न्याय और समता का समाज नहीं होगा। हां, कुछ लोग जनता की छाती पर बने रहेंगे। हिंसा के द्वारा काम करनेमें उसकी जीत होगी, जो हिंसा करने में चतुर होगा।-जयप्रकाश "नई क्रांति"

क्या हिंसा कारगर है ?

नहि वेरेन वेरानि सम्मतीध कुदाचनं ।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो ॥

यहां कभी वैर से वैर का शमन नहीं होता है। अवैरसे-प्रेम से ही शमन होता है। यह सनातन धर्म है। —धम्मपदं, यवकवग्गो, "बौद्ध दर्शन"

× × × ×

कुछ लोग यह आपत्ति करते हैं कि दान मांग करके समाज को बदलना संभव नहीं है। गरीब संगठित हों, तभी समाज बदलेगा और उसके लिये हिंसा का उपयोग करना ही होगा।

हिंसा से समाज बदल सकता है, पर हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं वैसा वह नहीं बनेगा। हिंसा से न्याय और समता का समाज नहीं होगा। हां, कुछ लोग जनता की छाती पर बने रहेंगे। हिंसा के द्वारा काम करनेमें उसकी जीत होगी, जो हिंसा करने में चतुर होगा।-जयप्रकाश "नई क्रांति"

अहिंसा ही क्यों ?

ऋषियों ने कहा था :—

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्य अहम् चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥

सारी दुनिया मेरी तरफ मित्र की निगाह से देखे, मगर ऐसा हम चाहते है तो हमें भी दुनिया की तरफ इसी मित्र भावना से देखना होगा ।

—विनोबा "धर्मचक्र प्रवर्तन"

"सव्वे जीवा वि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं"
सभी जीव जीने की इच्छा करते है न कि मरने की ।

—"दश वैकालिक सूत्र" 'जैन दर्शन'

प्रेम पर आधारित शक्ति दण्ड के भय से हासिल की गई शक्ति की बनिस्बत हजार गुनी अधिक असरकारी और स्थायी होती है । —गांधीजी

क्या हिंसा कारगर है ?

नहि वेरेन वेरानि सम्मतीध कुदाचनं ।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो ॥

यहां कभी वैर से वैर का शमन नहीं होता है। अवैरसे-प्रेम से ही शमन होता है। यह सनातन धर्म है। —धम्मपदं, यवकवग्गो, "बौद्ध दर्शन"

× × × ×

कुछ लोग यह आपत्ति करते हैं कि दान मांग करके समाज को बदलना संभव नहीं है। गरीब संगठित हों, तभी समाज बदलेगा और उसके लिये हिंसा का उपयोग करना ही होगा।

हिंसा से समाज बदल सकता है, पर हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं वैसा वह नहीं बनेगा। हिंसा से न्याय और समता का समाज नहीं होगा। हां, कुछ लोग जनता की छाती पर बने रहेंगे। हिंसा के द्वारा काम करनेमें उसकी जीत होगी, जो हिंसा करने में चतुर होगा।-जयप्रकाश "नई क्रांति"

"मुझे हिंसा से कोई उम्मीद नहीं"

सब सवालों का हल हिंसा से हो सकेगा ऐसी दलील करने वाले भी पड़े हैं। गर हिंसा ही इतना सार्वत्रिक और महत्व का उपाय हो तो भौंचाल और ज्वालामुखी के धड़ाकों का ही उपयोग करना हमेशा ठीक रहेगा।

× × × ×

जबरदस्ती से रची हुई दुनिया जबरदस्ती से ही जमीन दोस्त होने वाली है। ऐसी अनिश्चित दुनिया में रहने का मुझे मत कहिये। हिंसा कैसा भी रूप ले ले मैं उससे कोई उम्मीद नहीं रख सकता।

—कागावा (जापान के गांधी)

३५
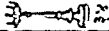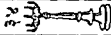
बिना अहिंसा क्रांति हो नहीं सकती

क्रांति पहले दिलों में होती है और फिर समाज में। जहां दिलों में क्रांति नहीं होती है, बल्कि क्रांति लादी जाती है और हिंसा से क्रांति होती है वहां वास्तव में क्रांति होती ही नहीं है।

कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या अहिंसा से क्रांति हो सकती है? यह तो ऐसा सवाल है कि क्या पानी से प्यास बुझ सकती है? पानी ही से प्यास बुझ सकती है, दूसरे किसी भी तरह से नहीं वैसे ही क्रांति अहिंसा से ही हो सकती है, दूसरे किसी भी तरीके से नहीं।

—विनोबा
"धर्मचक्र प्रवर्तन"

हिंसा रहेगी तो गुलामी भी रहेगी

जब तक दूसरों को मार डालने का मुझे हक है ऐसा गरूर रखने वाला एक भी शस्त्रधारी आदमी दुनिया में होगा तब तक संपत्ति का अनियमित वितरण याने गुलामी रहेगी ही।

—टॉलस्टॉय

"त्यारे करीशुं शुं"

३६
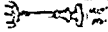
हिंसा को कैसे जीते ?

हां, मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम हिंसा का सामना मत करो, लेकिन गर कोई तुम्हारे दायें गाल पर चांटा मारे तो तुम अपना दूसरा गाल भी उसके सामने कर दो।

—ईसामसीह 'बाईबल'

× × × ×

"अक्रोधेन जिने कोधं असाधु साधुना जिने"

अक्रोध से क्रोध को जीतना और साधुत्व से असाधु को जीतना।

"धम्म पदम्, कोधवग्गो" —"बौद्ध दर्शन"

"उव समेण हणे कोहं, माण मद्दवया जिणे"

क्रोध को शांति से जीतना और मृदुता से मान को जीतना।

"दशवैकालिक सूत्र" —"जैन दर्शन"

पेट के मरीज़ को सर दर्द की मालिश

गांधीजी जो क्रांति करना चाहते थे, उसका उद्देश्य अहिंसक समाज कायम करना था। अहिंसा शब्द खुद हिंसा का प्रतिरोधी है। और हिंसा तो स्वयं लक्षण मात्र है। उसका मूल रोग शोषण है। जो लोग बड़ी बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की चर्चा में हिंसा के उपचार की बात करते हैं, वे पेट के मरीज को सर दर्द की मालिश मात्र करके अच्छा करना चाहते हैं। इस लिये जो हिंसा बन्द करना चाहते हैं उन्हें शोषण बन्द करने का उपचार करना चाहिये।

—धीरेन्द्र मजूमदार
"नईक्रांति"
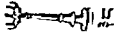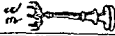
उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है !

यदि अहिंसा को हिंसा पर विजय पाना है तो उसे तीव्रगति से काम करना होगा, अन्यथा घटना चक्र आगे बढ़ता चला जायगा और हिंसा की बाढ़ में अहिंसा डूब जायेगी। लोगों के सामने निहायत जरूरी समस्यायें पेश हैं। उन्हें अगर अहिंसा जल्दी हल नहीं करेगी तो अहिंसक कार्यकर्त्ता के लिये इतिहास की गति रुकने वाली नहीं है।
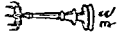
—जयप्रकाश नारायण

"भूदान यज्ञ" (साप्ताहिक) २-७-५४

सर्वत्र भय-वर्जन

हमने लोगों से कह दिया कि डर से न जमीन दी जाय, न ली जाय। हमने कहा है कि हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा दुर्गुण है डर जो हम कतई नहीं चाहते हैं। और डरा कर अगर आपसे कोई जमीन मांगता है तो आप कह दीजिये कि जो करना है सो कर लीजिये हम जमीन नहीं देंगे।

—विनोबा

"सर्वोदयकी ओर"
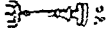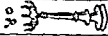
प्रेम का अर्थ-शास्त्र

एक घर में रोटी के लाले पड़े हैं, घर में माता और उसके बच्चे हैं। दोनों को भूख लगी है। खाने में दोनों के स्वार्थ-माता के और बच्चे के स्वार्थ परस्पर विरोधी है। माता खाती है तो बच्चे भूखों मरते हैं और बच्चे खाते हैं तो मां भूखी रह जाती है फिर भी माता और बच्चों में कोई विरोध नहीं है। माता अधिक बलवती है तो इस कारण वह रोटी के टुकड़ों को खुद नहीं खा डालती। ठीक यही बात मनुष्य के परस्पर के सम्बन्ध के विषय में भी समझना चाहिये।

—जोन रस्किन
"सर्वोदय"
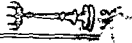
राज्य संस्था का खात्मा

जब कि पूँजीवाद का अन्त होगा, व वर्गों का अस्तित्व नहीं रहेगा, उत्पादन के सामाजिक साधनों के विषय में जब समाज के सदस्यों में कोई विषमता नहीं रहेगी, तभी वास्तविक लोकतन्त्र की स्थापना हो सकेगी। ऐसा लोकतन्त्र जिसमें किसी तरह के अपवाद न हों उसी दशा में सम्भव और सिद्ध होगा और तभी कहीं यह लोकतन्त्र भी विलीन हो जायेगा। पूँजीवाद के गुलामी से छुटकारा पाने के बाद लोगों को धीरे-धीरे समाज जीवन के प्राथमिक नियमों का पालन करने की आदत पड़ जायगी। समाज जीवन के यह नियम ऐसे हैं जिनको सदीयों से लोग जानते हैं और जो हजारों वर्षों से सदाचार के सभी ग्रन्थों में लगातार दोहराये गये है। इन नियमों का पालन बगेर जोर जबरदस्ती के, बगैर दबाव के और बगैर तावेदार के करने की वृत्ति लोगों में पैदा होगी, तब बल प्रयोग के उस विशेष उपकरण की आवश्यकता नहीं रहेगी, जिसे कि राज्य-संस्था कहते है।

—लेनिन
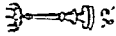
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः

ईशा वास्यमिदम् सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्वि द्धनम् ॥

ईश का आवास यह सारा जगत
जीवन यहाँ जो कुछ उसीसे व्याप्त है
अतएव करके त्याग उसके नाम से
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है
धनकी किसी के भी न रख तू वासना — "ईशोपनिषद्"

न सो परिग्गाहो वुत्तो नाय पुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गाहो वुत्तो इअ वुत्त महेसिणा ॥

संयम और लज्जा के निर्वाह के खातिर रखी हुई आवश्यक चीजों को ज्ञात पुत्र भगवान महावीर ने परिग्रह नहीं गिनी हैं। लेकिन आसक्ति और ममता को ही परिग्रह माना है। — "दशवैकालिक सूत्र" जैन दर्शन

हां, मैं जरूर खतरनाक हूँ

मैं लोगों को एक रास्ते से ले जाना चाहता हूँ, और इसलिए आज की परिस्थिति जल्द से जल्द बदल देना चाहता हूँ। मैं शांति तो चाहता हूँ, लेकिन सच्ची क्रांति के लिये शांति चाहता हूँ। श्मशान की शांति नहीं चाहता हूँ। श्मशान की जगह दूसरी कोई भी स्थिति मैं बरदाश्त कर लूंगा। किसी ने यह भी कह डाला कि मैं क्रांति की बात कर रहा हूँ, इसलिये खतरनाक हूँ। हां, मैं अवश्य खतरनाक हूँ पर उन लोगों के लिये जो आज की स्थिति को कायम रखना चाहते हैं, जो अपनी जिम्मेदारियाँ महसूस नहीं करते और अपनी थैलियों का मुँह बन्द रखना चाहते हैं जो इस समाज को बदलना नहीं चाहते, उनके लिए मैं खतरनाक जरूर हूँ।

—विनोबा

"भूदान प्रश्नोत्तरी"

अपरिग्रह व्रत का आरोहण

मैं तुमको कहता हूं कि-पैसे वाले आदमी को स्वर्ग में जगह नहीं मिलेगी।

और सुनलो। हो सकता है कि सुई के छेद से ऊट निकल जाय लेकिन पैसे वाले आदमी के लिये यह नामुमकिन है कि वह स्वर्ग में शामिल हो सके !!

"बाईबल" (मेथ्यु) ईसामसीह।

अपरिग्रह आज तक व्यक्तिगत शुद्धि का व्रत था। उसे अब सामाजिक शक्ति में बदल देना है।

—विनोबा

खादीग्राम

४४

हां, मैं जरूर खतरनाक हूँ

मैं लोगों को एक रास्ते से ले जाना चाहता हूँ, और इसलिए आज की परिस्थिति जल्द से जल्द बदल देना चाहता हूँ। मैं शांति तो चाहता हूँ, लेकिन सच्ची क्रांति के लिये शांति चाहता हूँ। श्मशान की शांति नहीं चाहता हूँ। श्मशान की जगह दूसरी कोई भी स्थिति मैं बरदाश्त कर लूँगा। किसी ने यह भी कह डाला कि मैं क्रांति की बात कर रहा हूँ, इसलिये खतरनाक हूँ। हां, मैं अवश्य खतरनाक हूँ पर उन लोगों के लिये जो आज की स्थिति को कायम रखना चाहते हैं, जो अपनी जिम्मेदारियाँ महसूस नहीं करते और अपनी थैलियों का मुँह बन्द रखना चाहते हैं जो इस समाज को बदलना नहीं चाहते, उनके लिए मैं खतरनाक जरूर हूँ।

—विनोबा

"भूदान प्रश्नोत्तरी"

इन्कलाब आने को ऐसा है न आया हो कभी।

—[illegible]

" ऐसा सवाल मत उठाइये कि भूदान का काम आज तक इतिहास में कभी भी नहीं हुआ है। बल्कि यह कहिये कि हम इसे करके ही रहेंगे। इतिहास में आज तक जो काम नहीं हुआ है वही 'काम' करने के लिये ही तो भगवान ने हमें पैदा किया है। यदि करने के सारे काम हमारे पूर्वजों ने ही कर डाले होते तो भगवान हमें यह जन्म ही किस लिये देता? इस लिये याद रखिये कि हमें एक ऐसी अहिंसक क्रांति कर दिखानी है जो आज तक के इतिहास में कभी नही हुई थी।"

—विनोबा
"विनोबा के साथ"
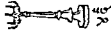
जन्नत को खुद जमीन पर आना होगा

कालात्मा इस काम के अनुकूल हो रहा है। हिन्दुस्तान में एक पुण्य की, धर्म की भावना फैल रही है। पुण्य का मतलब यह नहीं कि अच्छे काम का फल दूसरी दुनिया में स्वर्ग मे मिलेगा।

मैं जब पुण्य की बात करता हूँ तो स्वर्ग लोक में पहुँचाने वाले पुण्य की नहीं करता हूँ, बल्कि इस दुनिया में स्वर्ग लानेवाले पुण्य की बात करता हूँ।

—विनोबा
"धर्म चक्र प्रवर्तन"

दिमाग में बर्फ रखिये व दिल में रखिये आग

हिमालय का स्थान छाती नहीं, दिमाग है। दिमाग ठण्डा हो, पर दिल गर्म होना चाहिए। वहां तो भावनाएँ होनी चाहिए। दिमाग में हिमालय और हृदय में अग्नि होनी चाहिये। लेकिन आजकल के नवजवानों की हालत ठीक इससे उलटी ही रहती है।

—विनोबा

" विनोबा के साथ"
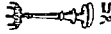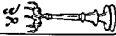
यहां वाद नहीं प्रतिवाद नहीं

बुलन्द ,ग़ादों के हम सहारे,
जहां में कब तक जिया करेंगे ?
हमें हमारी जमीन दे दो,
हम आसमां ले के क्या करेंगे।

—जफर
(आखिरी मोगल बादशाह बहादुरशाह)
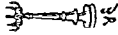
सबै भूमि गोपाल की

सारी जमीन खुदा की है और सब मखलुकात खुदा की है। जो कोई परती या मुर्दा जमीन को जिन्दा करता है वही उसका हकदार है।

जमीन उसी की है जो परती होने पर उसे जिन्दा करता है। उसको बेदखली करने का किसी को हक नहीं है।

मालिक जमीन को यदि न जोत सके और उसी वजह से जमीन परती रही हो—ऐसी जमीन को जो जोतेगा उसी को सुपुर्द की जायगी।

जमीन के टुकड़े के लिये जो कोई किसी से गैर इंसाफी से पेश आयेगा यकीनन उसको कयामत के दिन सातों जहां का बोझ गले में उठाना पड़ेगा।

(मिरजा अबुल फजल के "सेईंग्स ओफ मुहम्मद" से)
"भूमि पुत्र" १५-९-५४
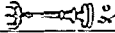
महर्षि मार्क्स

इसके बाद कार्ल मार्क्स आये जो दरिद्र और वंचित मानव के लिये पहिले पयगम्बर साबित हुये। इसके पूर्व किसी ऋषी-मुनि-संत या द्रष्टा ने जो बात नहीं कही थी वह उन्होंने कही। पहले सब कहते थे कि अमीर अमीर रहता है, गरीब गरीब। × × × × मार्क्स ही वह पहला व्यक्ति हुआ जिसने कहा गरीबी-अमीरी भगवान ने नहीं बनाई। यह नैसर्गिक तो है परन्तु अपरिहार्य नहीं है। नियति या विधि विधान नहीं है। यह परिहार्य है। इतना ही नहीं बल्कि इसका अन्त अवश्यंभावी है। इसका अन्त भी नियति ही है।

दादा धर्माधिकारी
"नई क्रांति"

"मैं भूमि पुत्र हूँ"

फौलाद और कांक्रीट की संस्कृति ने मनुष्य जाति को धरतीमाता की गोद से अलग कर दिया है। भूमि तो ईश्वर के पांव रखने की पटली है। मुझे भूमि की सुगंध पसंद है। "संस्कृत आदमी" होने की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं है। मैं तो उसकी गोद में खेलना चाहता हूँ।

कागावा

(जपान के गांधी)
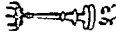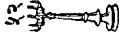
धन और धरती बँट के रहेगी

रात अंधेरी कट के रहसी
धन-धरती अब बंट के रहसी
भूखी जनता चुप कद रहसी
जोर जुलम अब घट के रहसी

× × ×

आज अंधेरो छंट के रहसी
धन-धरती अब बंट के रहसी

× × ×

अब न गरीबी डर के रहसी
धन-धरती अब बँट के रहसी

मुकुल
"नई क्रांति के गीत"

५३

लाल बत्ती

पूंजीपति लोग यदि अपनी संपत्ति का स्वेच्छा से त्याग न करेंगे जिसके परिणाम स्वरूप सभी लोगों को सच्चा सुख प्राप्त होगा–तो पूंजी पतियों के समय पर नहीं चेतने के कारण, भारत की जाग्रत किन्तु अज्ञानी और भूखी जनता देश में अशान्ति और अनवस्था पैदा करेगी, जिसे शक्तिशाली सरकार का शस्त्रबल भी नहीं रोक सकेगा।

महात्मा गांधी
"भूदान और कांग्रेस"

५४
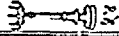
"भूखी जनता चुप कद रहसी"

आप यह न भूल जायें कि जमीन को सार्वजनिक करने का दिन अब करीब ही है। जिनको सरकार चुनने का हक है वे क्या रोटी का हक हासिल किये बिना रह सकते हैं? अब जनता जाग उठी है। बिना अपने हक को हासिल किये उसको चैन नहीं पड़ेगा। और हक का एहसास होते ही जो मिल्कत पर सब का हक है इसको कोई एक आदमी न भोग सकेगा।

रविशंकर महाराज
"भूमि पुत्र"
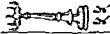
तीस साल पहले

सबसे बडी बदकिस्मती की बात जो मुझे महसूस हो रही है वह यह है कि हमारे अनगिनती भाई बहनों की जान धीरे-धीरे सिसक कर निकलती है, उनको लाजिमी तौर पर हमेशा ही फाकाकशी करनी पडती है और जब कभी चावल के दानों से वे अपना फाका तोडते हैं तो ऐसा लगता है मानों हमारे जीते रहने का मजाक उडा रहे हों।

गांधीजी

"यंग इंडीया"
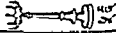
और आज

आज हमारे देश का सबसे बड़ा सवाल उन लाखों करोड़ों का है जिनको दो जून खाना भी नसीब नहीं होता। यह सवाल है उखड़े हुये इन्सानी समाज का। इसके पैदा होने की वजह है हमारे देहाती संगठन या अर्थनीति का बरबाद हो जाना, जिसका आधार ग्रामोद्योग और स्वावलम्बन पर था। हमारे गांवों की बढ़ती हुई दरिद्रता एक चिंता का विषय है और चार बरस के स्वराज्य के बावजूद इसमें रत्ती भर फर्क नहीं पड़ सका है।

विनोबा

धन संचय याने चोरी

पूंजी यानी सम्पत्ति का संचय। श्रमशक्तिका वास्तविक मूल्य से कम मूल्य देकर जो मुनाफा बच जाता है उससे सम्पत्ति का संचय होता है, अर्थात श्रमिक को उसके श्रम के बदले उचित से कम पैसा देकर जो आदमी पैसा जमा करता है उसको पूंजीपति कहते हैं। ये लोग दूसरे लोगों को यानी श्रमिकों को वास्तविक मूल्य न देने की चोरी करते हैं।

धीरेन्द्र मजूमदार

"भूदान-यज्ञ" (साप्ताहिक १६-७-५४)

५९
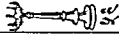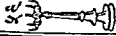
यह कैसा न्याय है ?

चोरी को हम गुनाह मानते हैं पर जो सग्रह करके चोर को प्रेरणा देता है उसकी कृति को चोरी नहीं मानते। उपनिषदों की कहानी मे राजा कहता है 'मेरे राज में न कोइ चोर है न कजूस" क्योंकि कजूस ही चोरों को पैदा करते है। चोरों का तो हम जेल भेजते हैं और उनके पिता को मुक्त रखते है। वे शिष्ट प्रतिष्ठित बनकर गद्दी पर बैठते हैं। यह कैसा न्याय है ?

विनोबा

"सम्पत्ति दान यज्ञ'
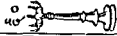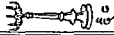
सोलोमन की सद्वाणी

जो लोग झूठ बोलकर पैसा पैदा करते हैं वे घमण्डी हैं और यही उनके मौत की निशानी है।

× × ×

हराम की दौलत से कोई लाभ नहीं होता। सत्य मौत से बचाता है।

× × ×

जो धन बढ़ाने के लिये गरीबों को दुःख देता है वह अन्त में दर-दर भीख मांगेगा।

× × ×

अमीर और गरीब दोनों समान हैं। खुदा उनको उत्पन्न करने वाला है।

रस्किन के "सर्वोदय" से
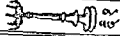
हम पाप के भागीदार हैं

जब तक मेरे पास जरूरत से ज्यादा खाने की चीजें है और दूसरों के पास कुछ भी नहीं है, जब तक मेरे पास दो वस्त्र है और किसी एक आदमी के पास एक भी नहीं है तब तक दुनिया में सतत चालू रहे हुए पाप का मैं भागीदार हूं।

टॉलस्टॉय

"त्यारे करीशुं शुं"

६२
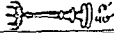
पाप और प्रायश्चित्त

आज तो वे (विनोबा) इतना कहते हैं कि जिस किसी के पास थोड़ा या बहुत संग्रह है, वह उसका एक अंश, यथा संभव षष्ठांश सम्पत्ति दान में देना शुरू करदें। अभिप्राय यह है कि वह अपने आप को उस संग्रह का मालिक न समझे। उसके पास जो संग्रह हो गया है वह असल में उपयुक्त नहीं है। इस लिये उस संग्रह को बढ़ाना नहीं है, वरन् जितनी जल्दी हो सके इतनी जल्दी खत्म कर लेना है। संग्रह का विसर्जन अपरिग्रही समाज की स्थापना के लिए है। सम्पत्तिदान में यदि इस मूल भूत तत्त्व का विचार न किया गया तो क्रांति की प्रक्रिया में उसका कोई स्थान नहीं रह सकता।

संग्रह पाप है और सम्पत्ति दान उस पाप का प्रायश्चित्त है।

दादा धर्माधिकारी
"मानवीय क्रांति"

६३

तिहरा इन्कलाब

यह सब मैं क्या कर रहा हूँ? मेरा उद्देश्य क्या है ? मैं परिवर्तन चाहता हूँ। प्रथम हृदय परिवर्तन, फिर जीवन परिवर्तन और बाद में समाज रचना में परिवर्तन लाना चाहता हूँ। इस तरह त्रिविध परिवर्तन, तिहरा इन्कलाब मेरे मनमें है।

विनोबा
" हिन्दुस्तान " (२१-११-५१)
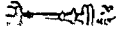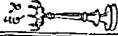
भूदान-यज्ञ की संभावनायें

(१) भूदान से जमीन के न्याय्य बंटवारे के अनुकूल वातावरण तेजी से बन रहा है;

(२) चूँकि छोटे-छोटे किसान भी जमीन दे रहे हैं इस लिये जमीन और संपत्ति की मालकियत के बारे में नया दृष्टि कोण पैदा हो रहा है;

(३) जमीन की कीमतें गिर रही हैं और इस तरह मुआवजे का प्रश्न आसान होता जा रहा है;

(४) बेजमीन वालों को जमीन मिल रही है, इसलिये उनको आसानी से भूमि की सहकारी समितियों में खींचा जा सकता है;

(५) जमीन का बंटवारा ग्रामसभाओं तथा बेजमीन वालों की सूचना के ही अनुसार किये जाने के कारण भ्रष्टाचार और पक्षपात का डर नहीं रहता;

(६) बेजमीन वालों को कम से कम पांच एकड़ सूखी या एक एकड हरी जमीन देकर जमीन का बंटवारा किये जाने के कारण 'सीलींग' का प्रश्न अपने आप हल हो जाता है।

—अशोक मेहता "नई क्रांति"

६५

क्रांतिकारी आंदोलन

मैं भूदान यज्ञ को अधिक से अधिक महत्व देता हूँ । हमारा यह कर्तव्य है कि हम इस आंदोलन को पूरी तरह समझें और उसे सफल करने में सब तरह की मदद पहुंचायें । यह किसी एक दल का आंदोलन नहीं है और सभी लोगों को चाहे उनका किसी भी दल से सम्बन्ध क्यों न हो, इसमें हिस्सा लेना चाहिये ।

X X X

याद रहे कि यह आंदोलन एक क्रांतिकारी आंदोलन है ।

X X X

उसने एक ऐसी हवा पैदा करदी है जिससे भारत की सबसे बड़ी समस्या को हल करना संभव हो गया है ।

पंडित जवाहरलाल नेहरू
"नई क्रांति"
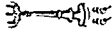
जनता जनार्दन की भलाई

जिस पवित्र भावना से प्रेरित होकर श्री विनोवाजी भूमिदान-यज्ञ के लिये पैदल यात्रा कर रहे हैं, उसकी विशेषता तथा महत्ता को हमें अच्छी तरह समझना चाहिये और उनके इस यज्ञ में हम सबको सहर्ष सहयोग देना चाहिये। इसको सिर्फ अपना कर्तव्य समझ कर नहीं बल्कि इस विचार से कि इसी में जनता जनार्दन की भलाई है।

बाबू राजेन्द्र प्रसाद
"नई क्रांति"
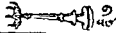
जो नींद से मदहोश हैं उनको भी जगा दो

एक महान कार्य देश में हो रहा है। लोग इसमें सहयोग दें। क्रांति के सपने युवक देखते हैं। क्रांति की बातें करते हैं। क्रांति फुरसत से नहीं होती। सारे काम ज्यों के त्यों चलते रहें और क्रांति भी हो जाय यह असंभव है। आपमें प्रेरणा हो कि आप त्याग करें और और भूदान-यज्ञ में सहयोग दें।

जयप्रकाश नारायण
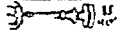
मृत्योर्मा अमृतं गमय

आज की दरिद्रता और अशांति शोषण में से पैदा हुई है शोषण पर आधारित पूरे समाज को ही अगर ऊपर उठाना है, तो मैंने जो 'मेरा' कहा है वह 'समाज' का कहने की नई प्रवृत्ति निर्माण करनी चाहिये। अपने जीवन की यही महान् क्रांति हम भूदान द्वारा सिद्ध करने वाले हैं। भूदान केवल 'भूदान' नहीं पूरे देश के लिये वह 'जीवनदान' है।

केदारनाथजी
'नई क्रांति'
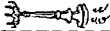
मूलगामी परिवर्तन

इस मामले को हल करने में भारत जनतंत्र की पद्धति का अनुकरण कर रहा है। परन्तु आचार्य विनोबा भावे का मार्ग इससे भी अधिक उदात्त है उन्होंने जंगल के नियम का त्याग कर दिया है और प्रेम के नियम को अपनाया है। विनोबा ने कानून का भी आश्रय नहीं लिया। उनका सारा आधार प्रेम के ही श्रेष्ठ न्याय पर है। इस तरह वह देश को मूलगामी परिवर्तन के लिये तैयार कर रहे हैं।

सर्वपल्ली राधाकृष्ण
"नई क्रांति"

"मिलके बांट खाइये यह संत की पुकार है"

दूसरों के शोषण से एश व आराम करने की नियत ने दुनिया को दुःखी कर रक्खा है। विनोबाजी ने दुनिया को सुखी बनाने का एक राह दिखाया है। वे कहते हैं कि जो कुछ माल मिलकत, बुद्धि शक्ति ईश्वर ने दी है सब मिल कर बांट के खाइये। गरीबी और अमीरी मिटाने का यही एक मार्ग है।

समाज की आखिरी सतह के लोगों को जो सुख मिला वही सच्चा सुख कहा जा सकता है। बिना सर्वोदय के ऐसा सुख कहां से संभव है?

रविशंकर महाराज
"भूमि पुत्र"

क्रांति सच्चे ग्रर्थ में
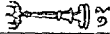
हमारा ग्रांदोलन कष्ट निवारण और दुःख निवारण का आन्दोलन नहीं है। केवल भूखे को रोटी, नंगे को कपडा और खानाबदोश को मकान देना ही हमारा ध्येय नहीं है। हम गरीब को मुहताज बनाना नहीं चाहते। उसे उपयोग की चीज देकर भीखारी नहीं बनाना चाहते। उत्पादन का साधन उसके हाथ में देकर उसे मालिक बनाना चाहते हैं।

दादा धर्माधिकारी
"क्रांति का अगला कदम"

भूदान यज्ञ ग्रांदोलन क्रांतिकारी आंदोलन है। वह शोषित और दलित वर्ग का उत्साह और वीरता बढ़ाने वाला है, वह क्राँति का विरोधी नहीं है, विरोधी है रक्तपात, क्रूरता और हृदयहीनता का।

दादा धर्माधिकारी
"मानवीय क्रांति"

७२

एटम बम से भी अधिक

यज्ञ हमेशा संकटों के निवारण के लिए और सबके कल्याण के लिए होते रहे हैं। भूदान यज्ञ भी इसी अर्थ में एक जन व्यापी यज्ञ है। अपने पास जो कुछ हो उसमें से दूसरों को हिस्सा देने की प्रेरणा यह पैदा करता है। मनुष्य में धार्मिकता जगाता है। इसलिए उसमें एटम बम से भी अधिक सामर्थ्य है।

इतिहास में इस तरह का अपनी इच्छा से भूमिदान पहले कभी नहीं हुआ। यह आन्दोलन अपूर्व है।

राजाजी

'भुदान और कांग्रेस'

कार्य की ज्योत सदा जले—क्रांति का अगला कदम

अब तक लगता था बापू के जाने के बाद उनसे जितना सीखा है, वह सब भूल चुके। परन्तु भूदान का काम देख कर लगता है कि महात्मा की आत्मा हमारे बीच विनोबाजी के द्वारा काम कर रही है और गांधीजी का काम चल रहा है, बन्द नहीं हुआ है। उनका काम केवल परदेशी राजा को हटाना तो नहीं था। हम जो राजनीतिज्ञ हैं वे उसी को क्रांति समझते

ा एक अव्वल कदम था।

ना चाहते थे।

ानोजी,

थी क्रांति"

आप क्या होंगे ? अगुआ, साथी या शिकार

हमारे यहाँ भूदान-यज्ञ शुरू हुआ है। यह कुछ सुखी लोगों के दान का प्रकार नहीं है। सवाल यह है कि हम इस यज्ञ के द्वारा होनेवाली क्रांति के अगुआ या साथी होंगे कि शिकार ?

काका कालेलकर
"नयी क्रांति"
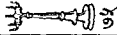
कार्य की ज्योत सदा जले—क्रांति का अगला कदम

अब तक लगता था बापू के जाने के बाद उनसे जितना सीखा है, वह सब भूल चुके। परन्तु भूदान का काम देख कर लगता है कि महात्मा की आत्मा हमारे बीच विनोबाजी के द्वारा काम कर रही है और गांधीजी का काम चल रहा है, बन्द नहीं हुआ है। उनका काम केवल परदेशी राजा को हटाना तो नहीं था। हम जो राजनीतिज्ञ हैं वे उसी को क्रांति समझते थे। परन्तु उनके सामने तो यह क्रांति का एक अव्वल कदम था।

वे स्वराज की ताकत से गरीबी का सवाल हल करना चाहते थे। वे कहते थे कि गरीब होना ही पाप है।

कृपलानीजी,
"नयी क्रांति"

आप क्या होंगे ? अगुआ, साथी या शिकार

हमारे यहाँ भूदान-यज्ञ शुरू हुआ है। यह कुछ सुखी लोगों के दान का प्रकार नहीं है। सवाल यह है कि हम इस यज्ञ के द्वारा होनेवाली क्रांति के अगुआ या साथी होंगे कि शिकार ?

काका कालेलकर
"नयी क्रांति"

जो काल करे सो आज कर ले

समान हित के साथ साथ सब की समान प्रतिष्ठा और सब के बीच समान मित्र भावना तथा सुख सुविधा का इतना समान बँटवारा हो कि जिससे किसी को दूसरे के प्रति ईर्ष्या न हो–ऐसे विविध अङ्ग होंगे तभी सहकार सफल होगा।

भूदान इस तरह के सहकार के लिये योग्य मनोभूमि का बनाने वाला यज्ञ कार्य है। तर्कवादों में उलझ कर हम भुलावे में न पड़ें। निश्चित रूप से कभी न कभी जमीन का बँटवारा होने ही वाला है उसे हम ही विवेक से काम लेकर स्वयं प्रेरणा से कर डालें।

कि. घ. मशरूवाला,
"नयी क्रांति"
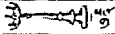
भूदान यज्ञ—एक नयी तजवीज

आचार्य विनोबा हवा को इस तरह बदल रहे हैं कि जमीन की समस्या, जिसका और किसी तरह सुलझना सम्भव न था, बिना किसी लड़ाई झगड़े के या कम-अज-कम संघर्ष से सुलझायी जा सकेगी। उनका यह आंदोलन विशुद्ध भारतीय है। उसकी जड़ें हिन्दुस्तान में और हिन्दुस्तान की परम्पराओं में हैं। ऐसा असामान्य आंदोलन जब होता है तो सामान्य गज से उसका माप नहीं किया जा सकता। यह एक नयी तजवीज है।

X X X

भूदान-यज्ञ सही तरीके का आंदोलन है और हर एक आदमी का फर्ज है कि वह पूरी तरह इसके महत्व को समझे और इसमें मदद दे।

पंडित जवाहरलाल,
"नयी क्रांति"

जमाने का धर्म

कोई माने या न माने जमाने का एक धर्म होता है। उस धर्म से कोई बच नहीं सकता आज के जमाने का धर्म यह है कि यह न माना जाय कि अमुक ऊंची जाति का है इसलिये उसका मान अधिक हो और उसका वेतन अधिक हो अमुक नीची जाति का इसलिये उसका तिरस्कार हो उसे [illegible]म दिया जाय। धनिक और गरीब का भेद अब चलने वाला नहीं है।

कृपलानीजी
"नई क्रांति"

क्रांति का श्री गणेश

जो क्रांतिकारी होता है, उसे क्रांति की शुरुआत अपने से ही करनी होती है। आप भूमिदान यज्ञ में काम कर रहे हैं, या करना चाहते हैं तो उसकी शुरुआत भी स्वयं करनी होगी। विनोबाजी कहते हैं कि भूमि मांगने वाले को सिद्धान्त स्वीकार करने की दिशा में कुछ न कुछ भूमि देना चाहिये। इसलिये यदि आप श्रमिक की प्रतिष्ठा करना चाहते हैं और सभी वर्गों को मजदूर बनाना चाहते हैं तो स्वयं शरीर श्रम का व्रत लें। जहां कहीं भी रहें दो तीन घंटे उत्पादक शरीर श्रम करना ही चाहिये।

धीरेन्द्र मजुमदार
"नई क्रांति"

बिना आचार के विचार पंगु बन जाता है

रे हमारा दान का विचार दूसरों की समझ में क्यों नहीं स्पष्ट है; हमारे विचार में ताकत नहीं। यदि हमारे विचारके , भावना, बोध, तपस्या और शुद्धता की प्रचण्ड शक्ति हो तो ी हमारा विचार दूसरों की समझ में आकर रहेगा। भला सूर्य श में कभी अन्धेरा भी टिक सकेगा? कारण सूर्य के पास प्रकाश की प्रचण्ड शक्ति जो है।

शिवाजी भावे
"श्रमदान"

जब गरीबी बँटेगी तब गरीबी मिटेगी

जमीन देना तो आरम्भ है। गरीबों की सेवा करते करते आप खुद गरीब बन जायेंगे। ऐच्छिक गरीब बनेंगे तो आप सच्ची समता पर पहुँच गये। यह वामन के तीन चरण हैं:—

१ जमीन देना,

२ गरीबों की सेवा का व्रत लेना,

३ खुद गरीब बनना। सब गरीब बनेंगे तब गरीबी मिटेगी। जब गरीबी बंटेगी तब गरीबी मिटेगी। तब सबका स्तर समान हो जायगा।

विनोबा

"धर्मचक्र प्रवर्तन"
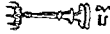
विना आचार के विचार पंगु बन जाता है

आखिर हमारा दान का विचार दूसरों की समझ में क्यों नहीं आता? कारण स्पष्ट है; हमारे विचार में ताकत नहीं। यदि हमारे विचारके पीछे आचार, भावना, बोध, तपस्या और शुद्धता की प्रचण्ड शक्ति हो तो निश्चय ही हमारा विचार दूसरों की समझ में आकर रहेगा। भला सूर्य प्रकाश में कभी अन्धेरा भी टिक सकेगा? कारण सूर्य के पास प्रकाश की प्रचण्ड शक्ति जो है।

शिवाजी भावे
"श्रमदान"

जब गरीबी बँटेगी तब गरीबी मिटेगी

जमीन देना तो आरम्भ है। गरीबों की सेवा करते करते आप खुद गरीब बन जायेंगे। ऐच्छिक गरीब बनेंगे तो आप सच्ची समता पर पहुँच गये। यह वामन के तीन चरण हैं:—

१ जमीन देना,

२ गरीबों की सेवा का व्रत लेना,

३ खुद गरीब बनना। सब गरीब बनेंगे तब गरीबी मिटेगी। जब गरीबी बंटेगी तब गरीबी मिटेगी। तब सबका स्तर समान हो जायगा।

विनोबा
"धर्मचक्र प्रवर्तन"
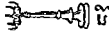
उचित मजदूरी

हम पहले ही कह चुके हैं कि मजदूर का उचित पारिश्रमिक तो यही हो सकता है कि उसने जितनी मेहनत हमारे लिये की हो उतनी ही मेहनत जब उसे आवश्यकता हो हम भी उसके लिये कर दें।

× × × ×

सच पूछिये तो लोगों को भूखों मरने की स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब मजदूरों को कम मजदूरी दी जाती है। मैं उचित मजदूरी दूं तो मेरे पास व्यर्थ का धन इकट्ठा न होगा, मैं भोग विलास में रुपया खर्च न करूंगा और मेरे द्वारा गरीबी न बढ़ेगी। जिसे मैं उचित दाम दूँगा वह दूसरों को उचित दाम देना सीखेगा।

जॉन रस्किन
"सर्वोदय"
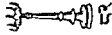
एक का मजा दूसरे को सजा

जहां एक आदमी आलसी रहता है वहां दूसरे को दूनी मेहनत करनी पड़ती है। इंग्लैंड में जो बेकारी फैली हुई है उसका यही कारण है। कितने ही लोग धन इकट्ठा हो जाने पर कोई उपयोगी काम नहीं करते अतः उनके लिये दूसरे आदमियों को परिश्रम करना पड़ता है। यह परिश्रम उपयोगी न होने के कारण काम करने वाले का इसमें लाभ नहीं होता। ऐसा होने से राष्ट्र की पूँजी घट जाती है। इस लिये ऊपर से यद्यपि मालूम होता है कि लोगों को काम मिल रहा है, परन्तु भीतर से जांच करने पर मालूम होता है कि अनेक आदमियों को बेकार बैठना पड़ रहा है।

जॉन रस्किन
"सर्वोदय"
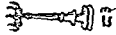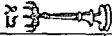
सच्चा श्रम

वास्तव में सच्चा श्रम वही है जिससे कोई उपयोगी वस्तु उत्पन्न हो। उपयोगी वह है जिससे मानव जाति का भरण-पोषण हो। भरण-पोषण वह है जिससे मनुष्य को यथेष्ट भोजन वस्त्र मिल सके या जिससे वह नीति के मार्ग पर स्थिर रह कर आजीवन सत्कर्म करता रहे। इस दृष्टि से विचार करने से बड़े बड़े आयोजन बेकार बन जायेंगे। सम्भव है कि कल-कारखाने खोल कर धनवान होने का मार्ग ग्रहण करना पाप कर्म मालूम हो।

जॉन रस्किन
"सर्वोदय"
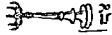
भारत गांवों का या शहरों का !

हमें गावों के भारत और शहरों के भारत के बीच चुनाव करना है। हमारे गांव, हमारे देश जितने ही पुराने हैं और शहर तो विदेशी हुकूमत की देन है। आज हमारे शहर गांवों पर हुकूमत करते हैं और उनका रस खींच रहे हैं जिससे गांव ध्वंस हो रहे हैं। मेरी बुद्धि मुझे बताती है कि यह हुकूमत खत्म होकर शहरों को गावों का सेवक बनना चाहिये। गांवों का शोषण अपने आपमें एक व्यवस्थित हिंसा है। अगर हम अहिंसा के आधार पर स्वराज्य की रचना करना चाहते हैं तो हमें गावों को उनकी उचित जगह देनी होगी।

महात्मा गांधी
"हरिजन" २०-१-४०
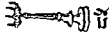
भूदान के अलावा

अगर आप समझ बैठे हों कि केवल भूदान से आपकी क्रांति पूरी हो जायेगी, तो वह नहीं होगी जैसे कि हम लोग समझ बैठे कि अंग्रेजों के चले जाने से हमारी क्रांति पूरी हो गई। जिनके पास जमीन नहीं है उनको पांच-पांच एकड़ जमीन आपने देदी, तो उतने से काम होने वाला नहीं है। x x x x x x अगर वे पांच बीघा लेकर आपस में सहकार न करें और दूसरे घरेलु धंधे, ग्रामोद्योग, खादी आदि भी न करें तो सिर्फ जमीन से क्या होगा ? x x x x इस लिये उसके साथ हमको ग्रामोद्योग चलाने होंगे। देहातों में जो कच्चा माल पैदा हो, वहीं पर उसका पक्का माल बने। यह सब हमको करना है।

कृपलानीजी.

बोधगया सम्मेलन २१-४-५४
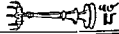
गांव वालों से

केवल जमीन से कुछ नहीं होने वाला है। आपको चाहिये कि जो कच्चा माल आप पैदा करते है उसका पक्का माल अपने घरेलू उद्योग धन्धों से तैयार करें। इसी तरीके से आप अपने को बचा सकेंगे।

x x x x

अपने बच्चों को शहर के स्कूलों में भेजने के बजाय अपने ही गांवों में स्कूल खोलें। इस तरह शिक्षा का एक ऐसा क्रम बंध जायगा जिससे हर धर्म और हर जाति के विद्यार्थी एक सा लाभ उठा सकेंगे।

विनोबा
"विनोबा का सन्देश"

८७
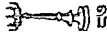
देहातों को आजादी कब हासिल होगी !

खेती के श्रम के साथ ही गांव के सभी लोगों को वर्ष भर काम देना और श्रम के बल पर ही गांव की सभी आवश्यकतायें पूरी करनी हो तो गांव में उत्पन्न कच्चे माल से वहीं पक्का माल भी बनाना होगा। यदि कच्चे माल से पक्का माल बनाने का श्रम गांव से बाहर चला जाय तो भी गांव टिक नहीं सकता।

× × ×

दैनिक जीवन के लिये आवश्यक जितने भी उद्योग हों सबके सब गावों में ही किये जायं। गांवका सारा कच्चा माल गांव में ही पक्का बनकर निकलना चाहिये। तभी गांव स्वावलम्बी, सुखी और स्वतन्त्र हो सकेगा।

शिवाजी भावे

"श्रमदान"
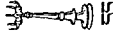
विना भूदान रचनात्मक काम निस्तेज हो जायेंगे

अपने गांव की समस्याओं का निरीक्षण करते हुये मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि हमारा बुनियादी सवाल भूमि का सवाल है। अहिंसात्मक तरीके से इसे हल करने की युक्ति खोजनी चाहिये और यह मसला हल नहीं कर सके तो अहिंसा का दावा हमें छोड देना चाहिये और जहां अहिंसा का दावा गया वहां रचनात्मक काम भी गया × × × अगर भारतीय संस्कृति, अहिंसा, सर्वोदय आदि पर हमें श्रद्धा हो तो भूदान यज्ञ का काम उठाना चाहिये तभी रचनात्मक काम बढ सकते हैं, नहीं तो सारे काम निस्तेज हो जायेंगे।
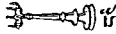
विनोबा

"हरिजन सेवक" ८-११-५२

८९

भूदान-यज्ञ की मन्शा

भूदान यज्ञ आंदोलन की मन्शा एक वाक्य में यह है कि हम गरीब आदमी की मालकियत कायम करना चाहते हैं। आज उसकी हुकूमत कायम होगई है। हम चाहते हैं कि हुकूमत की मार्फत इस देश की जमीन और दौलत पर भी उसकी मालकियत कायम हो।

दादा धर्माधिकारी
"क्रांति का अगला कदम"
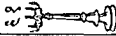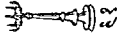
समन्वयी विनोबा

मैं नहीं चाहता कि हमारी संस्थाओं के लोग जो काम कर रहे हैं और जो मुफीद काम है तथा भूदान यज्ञ के लिये पोषक है, उस काम को वे छोड़ दें और भूदान यज्ञ में आयें। यह तो मैं नहीं कह रहा हूं लेकिन मै यह भी नहीं कहता कि जिस ढंग से आज वह काम चल रहा है उस ढंग मे वही काम चलाते ही चले जायें और भूदान-यज्ञ मानों कुछ हुआ या न हुआ समान ही है ऐसी ऐंठ में रहें, यह भी गलत होगा। मैं चाहता हूं कि उनका काम करने का तरीका ऐसा हो जिससे भूदान यज्ञ में और उनके कामों में एकरसता आजाय।

विनोबा
बोधगया सम्मेलन १९-४-५४
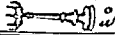
९०

भूदान-यज्ञ की मन्शा

भूदान यज्ञ आंदोलन की मन्शा एक वाक्य में यह है कि हम गरीब आदमी की मालकियत कायम करना चाहते हैं। आज उसकी हुकूमत कायम होगई है। हम चाहते हैं कि हुकूमत की मार्फत इस देश की ज़मीन और दौलत पर भी उसकी मालकियत कायम हो।

दादा धर्माधिकारी
" क्रांति का अगला कदम "
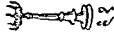
गरीब की मालकियत के तीन सूत्र

हम क्रांति चाहते हैं एक ऐसा समाज कायम करना चाहते हैं जिसमें जरूरत की चीजें उसको मिलेगी, जिसको उसकी जरूरत है। गरीब आदमी की मालकियत का यह पहला सूत्र है। × × × × × × दूसरा सूत्र यह है कि उत्पादन के साधन उत्पादक के हाथ में होने चाहिये × × × और तीसरा सूत्र यह है कि समाज में कोई व्यक्ति अनुत्पादक न रहे, याने मालिक और मजदूर का भेद कहीं भी न रह सके।

दादा धर्माधिकारी
"क्रांति का अगला कदम"

९२
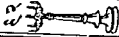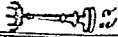
देनन-हार कोई और है

सीखे कहां रहीम जु
ऐसी देनी देन
ज्यों ज्यों कर ऊँचो करो
त्यों त्यों नीचे नैन ?
देनन हार कोई और है
देत रहत दिन रैन
लोग भरम हम पर धरे
ताके नीचे नैन

—भक्त कवि रहीम
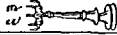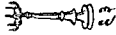
आप किस भावना से देते हैं ?

"पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयम्" कुछ भी हो, उसके साथ भक्ति-भाव हो तो काफी है। कितना दिया, कितना चढ़ाया, यह भी मुद्दा नहीं; किस भावना से दिया यही मुद्दा है।

विनोबा

"गीता-प्रवचन"

९४
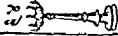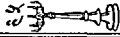
दान यानी सम्यक् विभाजन

भूमिदान-यज्ञ में दान शब्द आता है। उससे परहेज करने की जरूरत नहीं है। दानम् संविभागः–दान यानी सम्यक् विभाजन। यह है शंकराचार्य की दान की व्याख्या। उसी अर्थ में हम इस शब्द का प्रयोग करते हैं। जिसको जमीन मिलेगी, वह मुफ्त खानेवाला नहीं है। वह जमीन पर मेहनत-मशक्कत करेगा, अपना पसीना उसमें मिलायेगा, तब खा सकेगा। इस लिये उसे दीन बनने का कारण नहीं है। उसका अपना अधिकार हम उसे दिला रहे हैं।

विनोबा
"भूदान-यज्ञ"
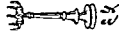
भिक्षा लेने नहीं दीक्षा देने आया हूँ

मैं भिक्षा मांगने नहीं आ रहा हूँ। हक़ मांगने आ रहा हूँ, दीक्षा देने आ रहा हूँ।

विनोबा

राजघाट १३-११-५१

मैं भिक्षा के तौर पर जमीन लेना नहीं चाहता। यदि भिक्षा के तौर लूँगा तो आर्थिक ढांचा बदलने की इच्छा पूरी नहीं होगी।

विनोबा

हिन्दुस्तान १५-११-५१

९८
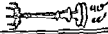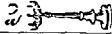
दोनों हाथ उलीचिये

कबीर ने लोगों से कहा था कि मैं आपको वैराग्य नहीं सिखा रहा बल्कि व्यवहार की शिक्षा दे रहा हूँ। यह कह कर उसने कहा कि :—

पानी बाढ़ो नाव में घरमें बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम॥

नाव में पानी बढ़ जाने से खतरा है। उसी तरह घर में सम्पत्ति बढ़ जाने से खतरा है। नाव के लिये पानी की जरूरत है परन्तु पानी नाव के नीचे होना चाहिये, नाव में नहीं। उसी तरह सम्पत्ति की भी आवश्यकता है, परन्तु घरों में नहीं, समाज में।

विनोबा
"धर्मचक्र प्रवर्तन"

न घमंड रहेगा न ही दीनता

मैं श्रीमानों को घमंडी, न गरीबों को दीन बनाना चाहता हूँ बल्कि एक धर्म विचार समझाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि देने वाला और लेने वाला दोनों इस धर्म विचार को समझें। देने वाला समझे कि मांगने वाले ने मुझ पर उपकार किया है और मोह से छुड़ाने का, उससे मुक्त होने का मुझे मौका दिया है।

विनोबा
"धर्मचक्र प्रवर्तन"

९८
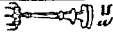
देने वालों से अपेक्षा

जहां मैं दान लेता हूं वहां हृदय-मन्थनकी, हृदय-परिवर्तनकी, मातृ-वात्सल्यकी, भ्रातृ-भावनाकी, मैत्रीकी और गरीबों के लिये प्रेमकी आशा करता हूं। जहां दूसरों की फिक्र की भावना जागती है वहां समत्व बुद्धि प्रगट होती है, वहां वैर भाव टिक नहीं सकता। वैर भाव का स्वतन्त्र अस्तित्व ही नहीं होता। पुण्य में ताकत होती है पाप में कोई ताकत नहीं होती। प्रकाश में शक्ति होती है, अन्धकार में कोई शक्ति नहीं होती।

—विनोबा
"हरिजन सेवक"
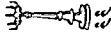
दान शिरोमणि

यह जो काम हो रहा है, वह सामान्य दान का काम नहीं है, बल्कि भूदान का है। अगर हम किसी को एक रोज भी खाना खिलाते हैं तो बड़ा पुण्य मिलता है। एक रोज के अन्न दान का अगर इतना मूल्य है तो एक एकड़ जमीन का जिससे एक आदमी की सारी जिन्दगी बसर हो सकती है कितना मूल्य होगा ?

—विनोबा
"भूदान यज्ञ" (साप्ताहिक)
२७-१०-'५१

"सब सम्पत्ति रघुपति के आही"

भूमिदान-यज्ञ का कार्य जैसे जैसे आगे बढ़ा वैसे वैसे सम्पत्ति का भी हिस्सा मांगे बगैर विचार की पूर्ति नहीं होती, यह बात भी स्पष्ट होती गई और आखिर मेरे मन में निश्चय हो गया कि सम्पत्ति का भी एक हिस्सा मैं लोगों से मांगूं।

सम्पत्तिदान यज्ञ उतना ही गहरा है जितना भूदान यज्ञ। जमीन हरेक के पास नहीं होती परन्तु सम्पत्ति तो हरेक के पास होती है और जमीन सम्पत्ति का ही एक प्रकार है। सम्पत्ति में बुद्धि, शक्ति, पैसा सब कुछ आता है।

"सब सम्पत्ति रघुपति के आही" तब छठा हिस्सा देने की बात गौण है। होना तो यह चाहिये कि अपना सब कुछ समाज को देना चाहिये और फिर अपने शरीर के लिये उसमें से थोडा सा लेना चाहिये।

—विनोबा

"सम्पत्ति दान यज्ञ"

गरीबों से दान क्यों ?

पूछा जाता है कि गरीबों से दान क्यों लेते हैं? जवाब यह है कि गरीबों में नई शक्ति का निर्माण होने के लिये दान लिया जाता है। हम गरीबों की सेना तैयार कर रहे हैं। इस महायज्ञ के लिये जन शक्ति तैयार कर रहे हैं।

—जयप्रकाश "भूमि समस्या का हल"

पर हमतो सत्याग्रह की ताकत खडी करना चाहते हैं। गरीबों की ताकत बढ़ाना चाहते हैं। अगर गरीब अपनी छोटी सी जमीन की मालकियत पकड रखेगा, तो बडा मालिक भी अपनी जमीन की मालकियत पकड रखेगा। अगर यह सारा मसला हल करना है तो मालकियत छोडनी पडेगी और जब छोटे लोग देंगे तभी यह सिद्ध होगा कि मालकियत गलत है।

—विनोबा

रघुनाथपूर ३०-१२-५४
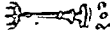
आसक्ति से मुक्ति

मेरे काम के बारे में किसी प्रकार की गलतफहमी न रक्खें। यह एक धर्म विचार है.। मनुष्य को आसक्ति से छुडाकर अपरिग्रही बनाना मेरा उद्देश्य है। इसलिये जो बडे बडे परिग्रही हैं उन्हीं के पास दान मांगने को पहुंचना है ऐसी बात नहीं है। आसक्ति तो एक लंगोटी में भी रह सकती है इसलिये हर एक व्यक्ति के पास आकर विचार समझाना है।

—विनोबा
"भूमिदान यज्ञ'

उठो और उठके निजामे-जहां बदल डालो

भगवान उवाच :—

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्य तन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥
॥ गीता ३।२३ ॥

श्री भगवान म्हणाले :—

मी जी कर्मी न वागेन जरी आळस झाडुनी ।
सर्वथा लोग घेतील माझें वर्तन तें मग ॥
गीताई ३।२३

श्री भगवान बोल्याः—

करूं न जो प्रवर्तु ना कर्म आळसने त्यजी ।
अनुसरे मनुष्यो ये सर्वथा मुज मार्ग ने ॥
गीता ध्वनि ३।२३

अर्थात् यदि आलस त्याग, कर्म करने में प्रवृत्त न होऊं तो सर्वथा लोग भी मेरे ही जैसा आचरण करने लगेंगे ।

हम क्या करें ?

मुझे क्या करना ? इस सवाल का निःशंक जवाब तो यह मिला कि पहले मेरे सब निजी काम-मेरी रसोई, मेरा पानी खींचना, मेरा चूल्हा सुलगाना, मेरे कपड़े धोने, जो हो सके सब अपने आप कर लेना।

× × × ×

ज्यों ज्यों मैं शरीर से ज्यादा काम लेता गया, त्यों त्यों मेरी नाजुक आदतें छूटतीं गईं, और मानसिक काम करने की मेरी कुवत (शक्ति) बढ़ती गई।

—टॉल्सटॉय

"त्यारे करीशुं शुं ? "

गांधी के पथ पर

यह कह सकते हैं कि आदर्श मार्ग तो है सादगी से जीना जिससे अपनी हर जरूरत मनुष्य अपने आप पूरी करे। अपने आप बनाई झोंपड़ी में रहना, हाथसे तैयार किये चूल्हे पर रसोई करना, अपनी बोई हुई सब्जियां खाना, अपने ही करघे पर बुना हुआ कपडा पहनना और सादगी से जीवन व्यतीत करना—अहा! इसमें कितनी स्वतन्त्रता है!

—कागावा
"जापान के गांधी"

वह तो औरतों का काम है !!

श्रम निष्ठा में बाधक एक बात और है और वह है-"कतिपय श्रम एक मात्र स्त्रियां ही करें" यह निर्बन्ध, खाली बैठे रहने पर भी पुरुष स्त्रियों के ये काम कभी न करेगा। बीमार होने पर भी उस बेचारी को किसी तरह वह श्रम करना ही पडेगा। सभी समाजों में यह एक प्रथा-सी बन गयी है पर वह अत्यन्त घातक है। समाज से यह भावना या मान्यता सर्वथा नष्ट होनी चाहिये कि "पीसना-पछोडना या रसोई बनाना एक मात्र स्त्रियों का काम है, और यदि पुरुष उन कामों में लग जाय तो वह मानो लुगाई बन गया।"

—शिवाजी भावे

"श्रम दान"

१०७

राजसूय यज्ञ युधिष्ठर कीनों, तामें जूठ उठाई

धर्मराज ने राजसूय यज्ञ किया था। कृष्ण भी वहां गये थे कहने लगे मुझे भी काम दो। धर्मराज ने कहा—"आप को क्या काम दें? आप तो हमारे लिये आदरणीय हैं। आप के लायक हमारे पास कोई काम नहीं है।" भगवान ने कहा-कि मैं "आदरणीय हूँ तो क्या नालायक भी हूँ? मैं भी काम कर सकता हूँ "तो धर्मराज ने कहा-"आप ही अपना काम ढूंढ लीजिये।" तो भगवान ने क्या काम लिया? जूठी पत्तलें उठाने का और लीपने का।

—विनोबा
"श्रमदान"

नित्य यज्ञ

सन् १९२४ में गांधीजी ने मुझे साबरमती आश्रम पर बुलाया था। मैं उनसे मिलने गया। उन्होंने पूछा:—

"फिलहाल क्या करते हैं? चरखा चलाते हैं?"

"रोज नहीं चलाता। श्रावण महीने में कातता हूँ?"

"गर रोज कातें?"

"कैसे? मै देहातों में अविरत फिरता रहता हूँ"

"कितने देहातों में फिरते हैं?"

"करीबन बीस देहातों में फिरता हूँ"

"गर इन बीसों देहातों में चरखा रख दूं तो कातेंगे?"

गांधीजी के इन लफजों को सुन कर मैं उनके सामने ताकता रहा। बहुत सोचा, और आखिर चरखे के प्रति उनकी भक्ति की यथार्थता मेरी समझ में आई। अब रोज कातता हूँ। बहुत मजा आता है। उस मजा का वर्णन करना अशक्य है।

—रविशंकर महाराज

सूतांजलि—सच्ची श्रद्धांजलि

शरीर श्रम का सूक्ष्म रूप कताई में निहित है और श्रमवादी समाज रचना का श्रीगणेश सूतांजलि से ही होता है । अतः रामराज्य की स्थापना के लिये और सर्वोदय विचार के प्रति विश्वास प्रगट करने के लिये "एक गुंडी प्रति व्यक्ति" इस नियम के अनुसार अधिकाधिक संख्या में श्रद्धा निष्ठा के धागों की सूतांजलि ही अमर बापू के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—विनोबा

"भूदान यज्ञ" (साप्ताहिक)

सर्वोदय की प्रारम्भिक दीक्षा

सूतांजलि की कल्पना के बारे में ज्यों-ज्यों मैं सोचता हूँ त्यों-त्यों उसकी ताकत की गहराई मुझे महसूस होती है। और इसके प्रचार के लिये कितना भारी पुरुषार्थ करना पड़ेगा इसका मुझे पता लगता है।

यूं तो साल भर में देश के लिये एक गुंडी देना एक छोटी सी बात लगती है पर यह गुंडी अपने हाथ से कती हुई होनी चाहिये और अच्छे सूतकी होनी चाहिये, हर साल हर आदमी के पास से मिलनी चाहिये-यह खयाल आते ही विश्वरूप का दर्शन होता है × × × × × × × × सूतांजलि समर्पण यह सर्वोदय की प्रारंभिक दीक्षा है।

—विनोबा

"भूमिपुत्र" १-१२-५४

सूतांजलि—सच्ची श्रद्धांजलि

शरीर श्रम का सूक्ष्म रूप कताई में निहित है और श्रमवादी समाज रचना का श्रीगणेश सूतांजलि से ही होता है । अतः रामराज्य की स्थापना के लिये और सर्वोदय विचार के प्रति विश्वास प्रगट करने के लिये "एक गुंडी प्रति व्यक्ति" इस नियम के अनुसार अधिकाधिक संख्या में श्रद्धा निष्ठा के धागों की सूतांजलि ही अमर बापू के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—विनोबा

"भूदान यज्ञ" (साप्ताहिक)

सर्वोदय की प्रारम्भिक दीक्षा

सूतांजलि की कल्पना के बारे में ज्यों-ज्यों मैं सोचता हूँ त्यों-त्यों उसकी ताकत की गहराई मुझे महसूस होती है। और इसके प्रचार के लिये कितना भारी पुरुषार्थ करना पड़ेगा इसका मुझे पता लगता है।

यूं तो साल भर में देश के लिये एक गुंडी देना एक छोटी सी बात लगती है पर यह गुंडी अपने हाथ से कती हुई होनी चाहिये और अच्छे सूतकी होनी चाहिये, हर साल हर आदमी के पास से मिलनी चाहिये—यह खयाल आते ही विश्वरूप का दर्शन होता है × × × × × × × ४ सूतांजलि समर्पण यह सर्वोदय की प्रारंभिक दीक्षा है।

—विनोबा

"भूमिपुत्र" १-१२-५४

सर्वोदय का वोट

सूतांजलि की सारी शक्ति "प्रति मनुष्य एक गुन्डी" इस मन्त्र में है। उससे गुन्डी देनेवालों का वैचारिक परिवार बन जायगा। सर्वोदय समाज के रजिस्टर में तो हजारों के नाम होंगे लेकिन सूतांजलि देनेवाले लाखों होंगे। बल्कि उतनी पुरुषार्थ शक्ति यदि हममें हो तो करोड़ों भी हो सकते हैं।

—विनोबा

"श्रमदान"

बेकाम अक्ल और बेअक्ल काम

अगर ईश्वर की यह इच्छा होती कि कुछ लोग ही काम करें और कुछ केवल सोचें ही, तो वह कुछ को "राहु" बनाता और कुछ को "केतू" कुछ को "शिर" ही "शिर" देता और कुछ को "हाथ" ही "हाथ"। मतलब यह है कि हरेक को सोचना चाहिये। हरेक को काम करना चाहिये। यह ठीक है कि यदि किसी के हाथ में कला है, तो वह हाथ का काम ज्यादा करे। लेकिन सोचने का काम भी जरूर करे। तब ज्ञान और कर्म एक हो जायेंगे। हमारे यहां विचित्र बात हुई। ज्ञान अलग और कर्म अलग। "बेकाम अक्ल और बेअक्ल काम"।

विनोबा २२-८-५४

" भूदान यज्ञ " (साप्ताहिक) १०-९-५४
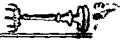
दूसरों के कंधों से उतर जाइये

किसी आदमी को वाकई गुलामी की प्रथा पसन्द न हो और उसमें अपने आप शरीक होना न चाहता हो, तो पहले उसे इतना तो करना ही चाहिये कि उसे दूसरे की मिहनत का फायदा न उठाना-फिर चाहे यह जमीन की मालकी की वजह से मिलता हो, सरकारी नौकरी की वजह से मिलता हो या पैसे के जरिये मिलता हो।

दूसरों की मिहनत का फायदा उठाने की नियत एक दफा खत्म हो जाय यानी जहां तक हो सके अपनी जरूरतें अपने आप पूरी करने का शुरू कर दे तो फिर आदमी को देहात को छोड़कर शहर में आने का खयाल तक नहीं आयेगा।

—टॉलस्टॉय
"त्यारे करीशुं शुं ?"

११५

शासन मुक्त समाज की ओर

उत्पादन की प्रक्रिया तथा साधन पूंजी के हाथ से निकाल कर श्रम के हाथ में सौंपने की आवश्यकता है यही कारण है कि गांधीजी हमेशा चरखे को अहिंसा का प्रतीक कहते थे, क्योंकि हिंसा से मुक्ति पाने के लिये पूंजी से मुक्ति पाना अनिवार्य है और चरखा पूंजी-मुक्ति का साधन है।

-धीरेन्द्र मजूमदार

११५

चरखा-स्वतन्त्रता का प्रतीक है

गांवों में हम जो फसल पैदा करते हैं उसीसे ही शहर वालों और पूँजीपतियों के हाथ अपनी जरूरत की चीजें खरीदते हैं। x x x x इस असहायता और परावलंबन से मुक्ति पाने का एक मात्र साधन है चरखा। यह चर्खा हमारे स्वावलंबन का प्रतीक है। हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक है।

× × × ×

कपास तो आज भी गांव में पैदा होती है लेकिन हम उसे पूँजीपतियों के हाथ बेच देते हैं, फिर उनसे अधिक कीमत में उसी कपास का कपड़ा खरीदते हैं। इस तरह हमारा शोषण चलता है। हम इस शोषण का निराकरण स्वावलंबन से ही कर सकते हैं। अगर अपने गांव में हम कपास भी पैदा करलें, सूत भी कातलें, और कपड़ा भी बुनलें तो वर्तमान शोषण से मुक्ति पा सकते हैं।

—जयप्रकाश

"भूदान यज्ञ" (साप्ताहिक) ४-३-५५
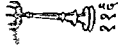
क्या वाकई मिल का कपड़ा सस्ता है !

कुछ लोग कहते हैं कि मिल के कपड़ों की अपेक्षा खादी महंगी पड़ती है। लेकिन मिल के कारण जितने लोग बेकार हो जाते हैं उनको खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी अगर मिलों पर सौंपी जाय तो मिलका कपड़ा महंगा हो जायगा। मिल की चीज सस्ती इसलिये होती है कि वहां पर लोगों को कम से कम मजदूरी दी जाती है। मतलब लोगों को भूखों मरना पड़ता है। खादी सबको काम देती है और खिलाती है।… …
क्या जहर सस्ता और अमृत महंगा है, इस लिये जहर खरीदियेगा ?

—विनोबा
" विनोबा के साथ "
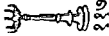
गांधी भक्तों से

गांधीजी अगर चरखा या स्वावलंबन का संदेश न सुनाते होते तो मनुष्य अहिंसा की खोज में भटकता रहता, उसे राह नहीं मिलती; क्योंकि राज्यवादी-संचालित समाज व्यवस्था तथा पूंजीवादी केन्द्रित-अर्थ-व्यवस्था के चलते मनुष्य पर से शासन और शोषण के बोझ का अन्त नहीं हो सकता, और इनके अन्त हुये विना मानव हृदय के हिंसा प्रतिहिंसा के घात प्रतिघात का गतिरोधक भी असंभव है; यानी हिंसामुक्ति की सिद्धि संभव नहीं है।

अतएव हर एक गांधी भक्त का कर्त्तव्य है कि वह गांधीजी ने चरखे द्वारा समाज के उद्धार की जो परिकल्पना की थी उस पर गंभीरता पूर्वक विचार करे और आज जो विराट तथा आडम्बर पूर्ण पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था के मोह में मानव फंसा हुआ है उसमें से उसे निकालने का उपाय करे।

—धीरेन्द्र मजूमदार

"भूदान यज्ञ" (साप्ताहिक) २-१०-५४

राजनीति में यह ताकत नहीं है

राजनैतिक सत्ता में समाज को आगे ले जाने की अधिक शक्ति नहीं है। यह शक्ति और यह वृत्ति सर्व बन्धनों से निर्लिप्त, सर्व स्थानों से अलिप्त, सेवा परायण वृत्ति से सेवा करने वालों में ही हो सकती है। इस वस्तु का भान क्यों कि राजनैतिक कार्यकर्ताओं को नहीं है वे उसी क्षेत्र में जाने का प्रयत्न करते हैं। अगर यह भान हो तो बहुत सारे लोग सामाजिक क्षेत्र में ही आने की कोशिश करेंगे।

—विनोबा

राजघाट १४-११-५१

११९
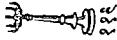
क्या हमें केवल परती जमीन मिलती है ?

भूदान में केवल परती जमीन ही मिलती है यह गया आदि जिलों में किये गये कामों से गलत साबित होता है। जमीन के बंटवारे का भूदान यज्ञ द्वारा पूर्ण और अंतिम रूप से हल होगा या नहीं यह आज कहना कठिन है, किन्तु यह सच है कि इसके द्वारा बहुत बड़े पैमाने पर जन संपर्क स्थापित किया जा सकता है और भूमि के पुनः वितरण के पक्ष में एक विशाल और व्यापक जन-मत निस्संदिग्ध रूप में पैदा होता है।

—अशोक मेहता
"नई क्रांति"

१२०

बंजर, पड़ती जमीन

मैं समुद्र हूँ। समुद्र किसी भी पानी को अपने भीतर प्रवेश के लिये इन्कार नहीं कर सकता, चाहे गंगा हो या नाला हो। मैंने तो कहा है कि सारी जमीन मेरी है। खराब होगी तो भगवान ने जिस तरह कुब्जा दासी को भी अपनाया और उसका उद्धार किया, हम भी जमीन का उद्धार करेंगे।

× × × ×

परन्तु खास बात तो और है। हमें तो हर तरह की जमीन चाहिये, खेती के लिये, चारागाह के लिये, जैसी जमीन होगी उसका वैसा ही उपयोग होगा। परन्तु उससे भी बड़ी बात तो भूदान-यज्ञ के सैद्धांतिक पीठिका की है।

—विनोबा

"भूदान प्रश्नोत्तरी"
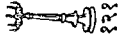
हमारे अनपढ़ किसान !

हमारा सामान ले जानेवाली बैलगाडी का गाडीवान कह रहा था—"मैंने अपनी जमीन का सबसे बढ़िया दो एकड का टुकडा दान दिया है। दिल चाहता है घरबार त्याग कर विनोबाजी के साथ रहूँ और देश की सेवा करूँ। कल विनोबा जी ने जो कहा कि सारे गांव का एक परिवार बनाना चाहिये, वह बात मुझे बहुत पसन्द आई।"

यह कहने वाला एक गरीब अनपढ किसान था।

—निर्मला देशपांडे
"विनोबा के साथ"

कानून कब, कैसे और कैसा ?

मुझे कानून से इन्कार नहीं है परन्तु कानून तो तब आता है जब पहले लोकमत तैयार होता है। अस्पृश्यता निवारण कानून बन सका क्यों कि लोकमत उसके अनुकूल था। कानून से सब काम होते ही हैं ऐसा मैं नहीं मानता। क्या जाति भेद कानून से मिट सकेंगे? क्या अन्तर-जातीय विवाह कानून से कराये जा सकते हैं ?

कानून मैं ऐसा चाहता हूं जिसको सर्वसाधारण मानें। कानून बनाकर जबर्दस्ती से काम नहीं कराया जा सकता। जनता को मान्य नहीं है वह कानून अमल में नहीं आ सकता।

—विनोबा
"भूदान प्रश्नोत्तरी"

कानून की बात कानून वालों पर छोड़िये

कानून की बात हमेशा उठाई जाती है। लेकिन मेरा कहना है कि इस कानून की बात कानूनवालों पर छोड़ दीजिये। हमें तो अपना काम इसी तरीके से किये जाना है। हो सकता है कि इस तरीके से ही सारी जमीन बेजमीनों में बँट जाय, और कानून की आवश्यकता ही न रहे। लेकिन अगर मनुष्य की संकल्प शक्ति उतनी कारगर नहीं हुई, जितनी इस समस्या को हल करने को जरूरी है, और राज्य की मदद लेनी ही पड़ी, तो उस हालत में भी हमें समझना चाहिये कि हमारा यह काम कानून बनाने में पूरा मददगार होगा। यानी या तो कानून की आवश्यकता ही नहीं रहेगी या जो कोई कानून बनना है वह बिना विरोध के आसानी के साथ बन सकेगा।

—विनोबा

"भूदान-यज्ञ" ३-४-५२ सेवापुरी

१२४

क्या हम जमीन के टुकड़े कर रहे हैं ?

अगर पांच करोड़ एकड़ भूमि हस्तान्तरित हो जाती है, तो जो महान क्रांति होगी उसके मुकाबले में यह फ्रेगमेन्टेशन वाला प्रश्न बहुत मामूली है। वास्तव में यह सवाल ही व्यर्थ है।

x x x x

"एकोनोमिक होल्डींग" की बात करते हुए हम देश की हालत को भूल नहीं सकते। यहां जमीन बहुत कम है और जरूरत होलिंडग (टुकड़े, मिलकियत) बड़े करने की नहीं, छोटे होल्डींग से अधिक पैदावार निकालने की है। चीन और जापान में होलिंडग कितनी कम है ?

—विनोबा

"भूदान प्रश्नोत्तरी"

मैं "सीलिंग" नहीं "रूफिंग" (सुरक्षा) चाहता हूँ।

"सीलिंग" की बात ही खतरनाक है। हमें वह बात नहीं करनी चाहिये। आज वह बात सर्वसामान्य हो गई है। मैंने कहा मैं "सीलिंग" नहीं रूफिंग (सुरक्षा) चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि यह सिद्धांत कबूल करो कि हर परिवार को पांच एकड भूमि मिले और फिर जो बचती है उसका कुछ भी करो कुछ लोग कहते है कि आपके कहने के मुताबिक रूफिंग (छाजल) किया जाय तो वह इतना नीचा होगा कि जिसके कारण झूक कर अन्दर जाना पडेगा। मैंने कहा कोई हर्ज नहीं। हमें दिल्ली की नहीं ग्राम की "रूफींग" चाहिये।

—विनोबा
"भूदान प्रश्नोत्तरी"

भूदान कार्यकर और गांधीजी की कार्य पद्धति

भूदान का काम करने वालों को गांधीजी की कार्य-पद्धति समझ लेना चाहिये। वह पहले व्यक्ति को समझाते थे। फिर जिस चीज का अन्त करना चाहते थे उसके पक्ष में अगर कोई विचार हो तो उसे इस बातका प्रचार करके खत्म करते थे कि उस चीज के पिछे कोई नैतिक आधार नहीं है। × × × × तीसरी बात आंदोलन करके इस चीज के समर्थकों पर नैतिक दबाव डालते थे × × × चौथा काम गांधीजी का यह होता था कि वे अन्त में अनीति से असहयोग करते थे। गांधीजी ने बताया शोषक के साथ शोषित सहयोग करता है वही सहयोग देना बन्द करदे तो अनीति और शोषण का अन्त हो जायेगा।

—जयप्रकाश

"नईक्रांति"
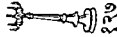
नवनीत

मैं मानता हूं कि :-

संसार के सभी मनुष्यों को खाने, पीने, रहने और पहनने की और अपने अपने उत्कर्ष के लिये जो जो सुविधायें जरूरी हो वे सब करीब करीब समान हिस्से में मिलनी चाहिये;

ऐसी कोई भी चीज चाहे व कपडा हो, अन्न हो और आराम और सुख की और कोई भी सुविधा हो जितने अंश में औसतन मेरे हिस्से में आये इससे ज्यादा मैं इस्तेमाल करूं तो संसार के किसी न किसी मनुष्य के हिस्से से छीन कर ही कर सकता हूँ;

अहिंसा के जरिये आर्थिक विषमता मिटाने के लिये यह जरूरी है कि एक ओर हम देहातों में चलते हुए छोटे छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन दें और दूसरी ओर कल कारखानों के जरिये चलते वडे वडे उद्योगों का वहिष्कार करें ताकि आइन्दा हमारी सम्पत्ति गरीबों में बंटती जाय और हमारा धन पैसेवाले और पूंजीपतियों के पास जाकर संसार की आर्थिक विषमता में और भी इजाफा न करे;

अगर हमें संसार के सभी मनुष्यों को सुखी करना हो तो हमें चाहिये कि हम संसार की सम्पत्ति बढ़ाते जायं और सम्पत्ति पर से अपना व्यक्तिगत हक उठालें;

मनुष्य गर चाहता है कि अपनी जिन्दगी का निर्वाह किसी दूसरे के कन्धे पे चढ़कर न हो तो उसे चाहिये कि अपनी रोटी अपनी निजी मिहनत व मशक्कत से पैदा करे;

एक ऐसे समाज की रचना की जाय जिसमें मनुष्य मात्र समान गिना जाय। संसार की सारी सम्पत्ति पर—चाहे वह कुदरत की सर्जी हुई हो या मनुष्य ने अपनी मिहनत से बनाई हो संसार के सभी मनुष्यों का समान हक रहे और सभी की मिहनत का बदला सुख सुविधा की दृष्टि से समान मिले। ऐसे समाज की स्थापना बिना प्रेम व अहिंसा के नहीं हो सकती है:-

सन्त विनोबा ने चलाया हुआ भूमिदान आंदोलन एक ऐसा आंदोलन है जिससे अहिंसक तरीके से शोषणहीन, शासन मुक्त वर्गविहीन समाज की स्थापना की ओर हम सब आगे बढ़ सकते हैं,

भूमिदान आंदोलन के जरिये जो क्रांति हम करना चाहते हैं वह तभी हो सकती है जब हम सब हमारी निजी जिन्दगी में ऐसी तब्दीलियाँ करें जिससे कि हमारी जीवन प्रणाली आगे बताये हुये हमारे खयालात से सुसंगत हो;

बिना हमारा सारा ध्यान इस आंदोलन की ओर केन्द्रित किये यह नामुमकीन है कि हम अहिंसक उपायों से हमारी मंजिल तय कर सकें और फिर हाल ऐसा कोई कार्य और समय और संपत्ति का ऐसा कोई भी उपयोग जो हमारी मंजिल तय करने में हमें मददगार न हो वह वर्ज्य है।

—चीनुभाई गी. शाह

१३०

सुधारकर पढ़िये :—

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
हांसिज	हासिल	६	११
देशाई	देसाई	८	१२
पढं, चुनं	पढे, चुने	१५	१३
माण	माणं	३७	८
घ, परिग्गाहो	न, परिग्गहो	४३	८
परिग्गाहो घुत्त, महसिणा	परिग्गहो घुत्ते महेसिणा	४३	९
शामिज	दासिज	४४	४
का	की	७१	२
दिखाया	दिखायी	७१	३

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
जाति का	जाति का है	७८	४
पहूँचा	पहुँचा	८९	२
मै	मैं	९०	३
जराय	जवाब	१०२	१
यह	वह	१०७	७
झूक	झुक	१२६	६

और जो कुछ
आप की
नज़र में आये।

कहां क्या पायेंगे ?